अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

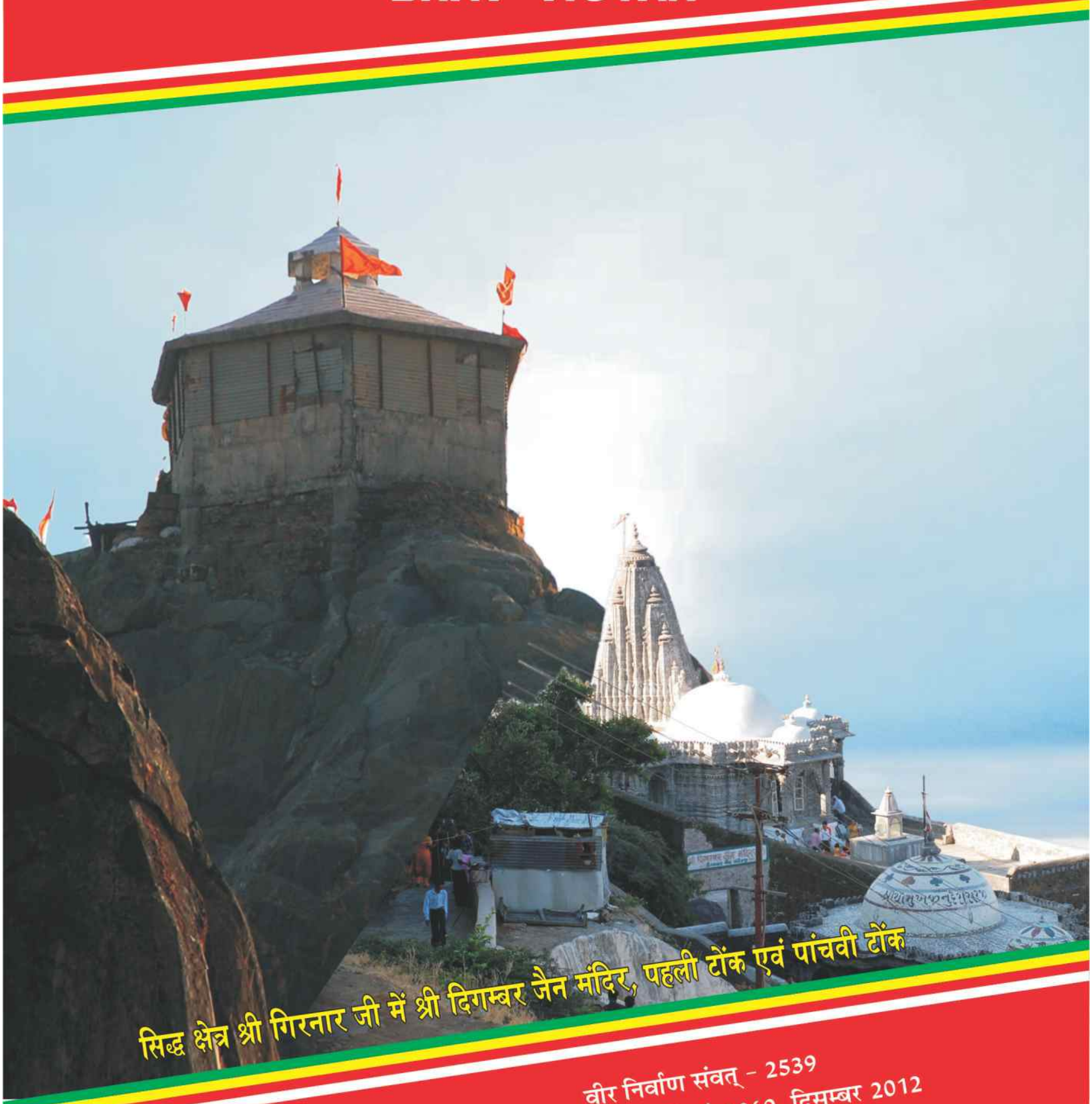

सिद्ध क्षेत्र श्री गिरनार जी में श्री दिगम्बर जैन मंदिर, पहली टोंक एवं पांचवी टोंक

वीर निर्वाण संवत् - 2539
मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष, वि.सं. 2069, दिसम्बर 2012

वर्ष : छह   अंक : बाईस   मूल्य : 10/-

मूकमाटी

और वह
धृति-धारिणी धरती
कुछ कहने को आकर्षित होती है,
सम्मुख माटी का
आकर्षण जो रहा है!
लो!
भीगे भावों से
सम्बोधन की शुरुआत
''सत्ता शाश्वत होती है, बेटा!
प्रति-सत्ता में होती हैं
अनगिन सम्भावनायें
उत्थान-पतन की,
खसखस के दाने-सा
बहुत छोटा होता है
बड़ का बीज वह!
समुचित क्षेत्र में उसका वपन हो
समयोचित खाद, हवा जल
उसे मिलें
अंकुरित हो, कुछ ही दिनों में
विशाल काय धारण कर
वट के रूप में अवतार लेता है,
यही इसकी महत्ता है।
सत्ता शाश्वत होती है
सत्ता भास्वत होती है वेटा!
रहस्य में पड़ी इस गन्ध का
अनुपान करना होगा
आस्था की नासा से सर्वप्रथम
समझी बात.....!

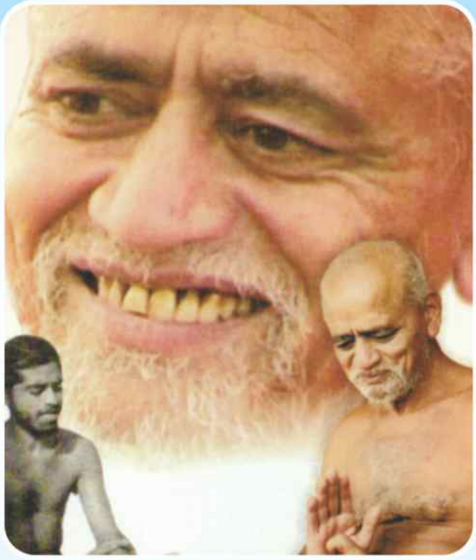

क्रमशः........

आगामी प्रमुख पर्व एवं तिथियाँ

22 जनवरी	- रोहिणी व्रत
26 जनवरी	- षोडसकारण व्रत प्रारंभ
09 फरवरी	- भ. आदिनाथ मोक्षकल्याणक
11-14 फरवरी	- लब्धिविधान व्रत
15-19 फरवरी	- पुष्पांजलि व्रत
15-24 फरवरी	- दशलक्षण व्रत
23-25 फरवरी	- रत्नत्रय व्रत
26 फरवरी	- षोडसकारण व्रत पूर्ण
1 मार्च	- भ. पद्मनाथ मोक्षकल्याणक
4 मार्च	- भ. सुपार्श्वनाथ मोक्षकल्याणक
8 मार्च	- भ. मुनिसुव्रतनाथ मोक्षकल्याणक
16 मार्च	- भ. मल्लिनाथ मोक्षकल्याणक
16 मार्च	- श्वेत पंचमी
18 मार्च	- भ. चन्द्रप्रभ मोक्षकल्याणक
18 मार्च	- रोहिणी व्रत
20-27 मार्च	- अष्टान्हिका व्रत
26 मार्च	- षोडशकारण व्रत प्रारम्भ

मुनिश्री आर्जवसागर जी का ऐलक दीक्षा संस्कार

मुनिश्री आर्जवसागर जी का मुनि दीक्षा संस्कार

शुभाशीष

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी
के धर्म प्रभावक परम शिष्य परम पूज्य
मुनिश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-छह
अंक - बाईस

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800
● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458
● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357
● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)
● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल
● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा, भोपाल
फोन : 0755-2673820, 9425601161
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक **पृष्ठ**

1. **सम्पादकीय** 2
2. **सम्यक् ध्यान शतक** 3
   मुनि आर्जवसागर
3. **पारसचंद से बने आर्जवसागर** 4
   सह-संपादकीय
4. **जैन धर्म और विज्ञान** 8
   मुनिश्री आर्जवसागर
5. **आगम और अलंकारमय तीर्थोदय काव्य** 11
   पं. लालचन्द जैन 'राकेश'
6. **गणितसार संग्रह** 15
7. **मुक्ति के योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव** 17
   शिवचरनलाल जैन मैनपुरी
8. **यात्रा के सैकड़ों साल पुराने प्रमाण** 21
   निर्मल कुमार पाटोदी
9. **समाचार** 25
10. **प्रश्नोत्तरी** 31

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्पादकीय

घायल गिरनार जी

- श्रीपाल जैन 'दिवा'

जैन धर्म का इतिहास दर्शाता है कि यह धर्म सत्य-अंहिसा पर अडिग रहा है। फिर भी अहिंसा पर हिंसा उपसर्ग करती आ रही है। भगवान महावीर के समय में भी घोर हिंसा का ताण्डव था। उनके समय में 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' के उच्चार के साथ हिंसा अपनी ऊँचाई पर थी। पर महावीर ने हिम्मत नहीं हारी और अंहिसा के पथ पर चल पड़े। महावीरत्त्व को उन्होंने त्यागा नहीं। और विश्व को जीओ और जीने दो का शान्ति-सन्देश देते रहे। आज भी महावीर की आवश्यकता संसार को है। हम देख रहे हैं कि वर्तमान में मारकाट-हिंसा का ताण्डव मचा हुआ है। समाज में जगह-जगह हिंसा-हत्या अपना वीभत्स रूप दिखा रही है। भगवान महावीर का निर्वाण तो हो गया। पर हमें लगता है कि वे फिर हमारे बीच हों-हमारे बीच आ जावें। कभी-कभी लगता है कि महावीर के रूप में आचार्य श्री विद्यासागर जी विद्यमान हैं। वे अहिंसा के ध्वज को थामे हुए हैं। उनके शिष्य व अन्य जैन साधु अहिंसा का ध्वज फहरा रहे हैं। इतना सब होते हुए भी हमारे देश में अहिंसा जगह-जगह घायल होती है। हमारी आँखों के सामने गिरनार जी तीर्थ घायल हो कराह रहा है। वहाँ के शासक मौन देख रहे हैं। यह शुभ संकेत नहीं है।

जैन तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ जी के चचेरे भ्राता भगवान श्रीकृष्ण थे। तभी से गिरनार पर्वत जैन तीर्थ रहा है। इसी पर्वत को नेमिनाथ जी ने अपनी तपस्थली बनाया था। आश्चर्य की बात है कि वर्तमान में गिरनार जी जैन तीर्थ पर असामाजिक तत्त्वों द्वारा जबरन कब्जा किये जाने का दुस्साहस किया जा रहा है। तीसरी टोंक व पाँचवी टोंक पर चरण व पत्थर पर उँकरी मूर्ति पर उन तत्त्वों ने कब्जा कर रखा है। दुःख की बात है कि मोदी जैसे मर्दानगी वाले मुख्य मंत्री के प्रशासन में उनकी नाक के नीचे यह सब कुछ घट रहा है। और उनकी ढील और जानकारी के होते हुए भी दिगम्बर जैन मुनि पर उन पण्डों ने चाकू से हिंसक हमला कर के गम्भीर रूप से घायल कर दिया। जैन मुनि प्रबलसागर जी महाराज सरल स्वभावी हैं जैसे कि प्रायः जैन मुनि होते हैं। अहिंसा पर हिंसा का आतंक छा गया है। सम्पूर्ण देश में जैन समाज हक्का-वक्का है और अहिंसक ढंग से रोष के साथ विरोध कर रहा है। तीर्थों पर कब्जे होने लगे हैं ऐसा दुर्नाम समय आ गया है। मोदी जी आपके प्रशासन में जैन तीर्थ पर हमलों के साथ कब्जे हो रहे हैं। जिस समाज के साधु और विद्वान अहिंसा एवं शांति का प्रचार-प्रसार करते हुए परोपकार का उपदेश देते हैं। हिंसक वातावरण के बीच भी अहिंसा की ध्वजा फहराते हैं और समाज में सुख शांति की मंगल कामना के साथ जीवन जीने का सदुपदेश देते हैं। बदले में मोदी जी आप अपने जैन समाज को क्या दे रहे हैं। भले ही आपका प्रत्यक्ष समर्थन न हो पर आपका मौन अप्रत्यक्ष रूप से जैन धर्म को और मानवता को

क्षति पहुँचा रहा है। आपकी जानकारी सजग होकर धर्मरक्षा करेगी ऐसा जो जैन समाज का भरोसा है वह भी घायल अवस्था में पुकार रहा है। आशा है आप अनसुनी नहीं करेंगे।

भारत में सभी धर्म के निवासी हैं। वे अपने धर्म को स्वतंत्रतापूर्वक पालन कर सकें ऐसी सुविधा गुजरात में भी मिलना चाहिए। गुजरात एक भला राज्य है। गुजरात के नागरिक भी सज्जन और भले लोग हैं। बशर्ते शासक-प्रशासक इस भावना का समादर करें। अन्यथा गुजरात के भले लोगों के सिर पर बदनामी का सेहरा बँध जावेगा। ऐसे कठिन समय में, गुजरात के भले लोगों से भी उम्मीद है कि वे जैन समाज का साथ देकर गिरनार जी पर हुआ कब्जा हटवाने में पूरा साथ देंगे।

जैन समाज के शांतिपूर्वक आन्दोलन-रैली आदि को सभी धर्म के लोग साथ देकर सफल बनायेंगे। इस विश्वास के साथ हम सब की परस्पर मंगल कामना रहे।

सम्यक् ध्यान शतक

- मुनि आर्जवसागर

गतांक से आगे ....

वर्धमान मंदिर किला, सहित सु-पर्वत नाथ।
ग्वालियर में साठ जिन, मंदिर नमते माथ।।

❖

वर्ष वीर निर्वाण का, पच्चीस सौ चौतीस।
'सम्यक् ध्यान शतक' लिखा, काव्य बनावे ईश।।

❖

मंदिर नया बजार में, पार्श्व प्रभो हैं नेक।
वर्षायोग में काव्य यह, रचा सु-पूर्ण विवेक।।

❖

पार्श्व प्रभो की शरण वा, विद्या गुरु आशीष।
पूर्ण हुआ यह काव्य शुभ, पढ़ें बनें शिव ईश।।

❖

इक सौ तेरा पद्य हैं, 'ध्यान शतक' में पूर्ण।
ध्यान करें निज एक सो, तेरा है सम्पूर्ण।।

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

(बचपन से आज तक जीवन गाथा)

गतांक से आगे ....

पारसचन्द ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज पर भी कविता लिखी थी। वह इस प्रकार है कि

विद्यासागर जग के तारे

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग में न्यारे
सबके नयनों के दुलारे
कठोर तप की दृढ़ता वाले
जग को राह दिखाने वाले
धर्म का पथ बतलाने वाले
अमृतवाणी गंगा को
जग में बहाने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर की बचपन की कहानी
इस संसार में है निराली
हुआ जब वैराग्य विद्यासागर को
तब त्याग दिया घर के मोह को
वे उन्नीस बरस की उम्र में ही
घर छोड़ बढ़े साधना की ओर
विषय भोगों से परे, निराले
आतम ज्ञान को जगाने वाले

विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे

विद्यासागर का वह ध्यान
इस सारे जगत में निराला था
उनका ध्यान लगा जब धर्म में
मात- पिता की आज्ञा लेकर
ब्रह्मचर्य व्रत दृढ़तम पाला था

पिच्छि कमण्डल धारण करके
सीधे मुनि हुये थे विरागी
मुनि पद की दृढ़ता रखने वाले
विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे
विद्यासागर हैं ज्ञान के सागर
जिन्होंने गुरु के संग में रहकर
ज्ञान का अर्जन किया अपार
तब गुरु की पदवी मिली फिर गुरु से
विद्यासागर में खूब जागा ज्ञान
तब करने लगे खूब व्याख्यान
व्याख्यानों की बोछारों से
अपने मार्ग पर बढ़ने वाले
विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे
विद्यासागर की ज्ञान किरण का
उजियाला फैला सारे जग में
ज्ञान के उस उजियाले से
उपजा अब भविकों को ज्ञान
ली दीक्षा विद्या के सागर से
संघ बना एक बड़ा मुनि का
देकर ज्ञान किरण सभी को
जगा रहे हैं जग को सारे
विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे
विद्यासागर हैं तप के धारक
जिसकी महिमा अपार है
जिस तप का पालन करते हैं
वह तप काँटों की राह है
विद्यासागर सारे भारत में
करते धर्म का विस्तार हैं

वन्दना करते सारे तीर्थों की
संयम तप का सहारा लेकर
अपने चारित्र की दृढ़ता वाले
विद्यासागर जग के तारे
जग में रहते जग से न्यारे। (4-8-84)

और भी कुछ कवितायें इतनी अल्प उम्र में रचने लगे थे। एक बार भगवान पार्श्वनाथ के बड़े मंदिर के प्रांगण में धार्मिक कवि सम्मेलन रखा गया था। जिसकी अध्यक्षता पारसचन्द जी के पिताजी श्रीमान शिखरचन्द जी कर रहे थे। उसी सम्मेलन में पारस ने अपनी कवितायें पढ़ी तो जनता भाव विभोर हो गयी और डॉ. भागचन्द जी जैन ने पारसचन्द को कविताओं की विशेषता पर एक पुरस्कार भी घोषित किया था। तदुपरान्त अन्त में कार्यक्रम की अध्यक्षता के नाते आभार व्यक्त करते हुए श्रीमान शिखरचन्द जी ने भी अपनी कुछ कविताएँ भजन रूप में गायी थी। जो पारस के लिए भी अति पसन्द थी और वैराग्य में भी निमित्त बनी वे निम्न प्रकार है - ये आतम कहाँ-कहाँ भटक फिरी..........., समय गुजर गया..........आदि। नवम्बर 1984 में पथरिया में ही (जब वैराग्य की अवस्था में आचार्य श्री के पास जाने की ठान रखी थी तभी) क्षु. मणिभद्रसागरजी (वर्तमान में मुनि श्री ब्रह्मानंदसागर जी) का पदार्पण हुआ उन क्षुल्लक जी ने कौमदी व्याकरण व रत्नकरण्डक श्रावकाचार भी पढ़ाना शुरू किया था और पारस से कहा कि तुम जैसा मुझे एक युवा चाहिए तब उनसे पारस ने कहा कि मैंने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के चरणों में समर्पित होने का निश्चय कर लिया है मैं मौंका देख रहा हूँ कि पिजड़े की खिड़की कब खुली मिले और उड़ जाऊँ 'फिर वापिस न आऊँ। पारस की ऐसी भावना को सुनके क्षुल्लक जी ने बहुत प्रशंसा की। ऐसे जीवन का एक शुभ मोड़ जो शुरू हुआ था जिस वजह से वैराग्य के पथ पर चलने वाले पारस अब सब अन्य कार्यों से रुचि हटाकर अपने जीवन का अनुभव वा वैराग्य के चिंतवन वा लेखन में लीन रहने लगे थे। पारस ने जो अपने चिंतन का जिन लेखों में अपनी अन्तर भावनाओं को व्यक्त किया है वे यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं -

1. अपना भविष्य

मैं अपने भविष्य के बारे में सोचकर बड़ा चिंतित सा होता हूँ मगर क्या इस सुख सुविधा में रहकर भी शान्ति का अनुभव होता है? तो नहीं। ना जाने मेरे भविष्य के बारे में पहले से कुछ लिखा-सा मालूम पड़ता है। कभी मेरे पिताजी इतनी खुशी के साथ इतने ऊँचे विचार धार्मिक भजनों में मुझे सुनाने लगते हैं तो कभी बोलने लगते हैं कि पप्पू तुम कोई अच्छा सा फेन्सी या रेडीमेड स्टोर डाल लो या कभी वो बोलते हैं कि तुम जो चाहो अच्छी पढ़ाई कर कोई अपने विचार अनुसार अच्छी सी नौकरी पकड़ लेना मगर क्या करूँ मेरा मन ही कुछ ऐसा है मैं सोचता हूँ कि जहाँ तक बने जब तक इन सारे जंजालों से दूर रहकर धर्म की ओर मन लगाऊँ। अगर मैं कोई धर्म की पुस्तक उठाता हूँ तो पढ़ने के पश्चात् कुछ शान्ति

का अनुभव होता है तो भी ठीक ही तो है। शान्ति तो हर एक मनुष्य के लिए जरूरी है। मेरे लिए अगर धर्म से शान्ति मिलती है तो किसी को बिजनिस से, नौकरी करने से या घूमने से इसलिए मैं सोचता हूँ कि इस धर्म रूपी शान्ति और सुख से अच्छा और क्या है? इसलिए मैं यहाँ-वहाँ दोस्तों, रिश्तेदारों और बाजार आदि घूमने ज्यादा ना जाकर और उससे रुचि हटाकर यहीं घर पर रहकर कुछ लेख, कवितायें लिखने की सोचता हूँ और दुःखमयी संसार को देखकर आत्म सुख अर्थात् स्वान्तः सुखाय अपने विचारों को कुछ शब्दों, पेराग्राफों और पेजों में एकत्रित करने की सोचता हूँ जिससे मुझे सफलता मिले और जीवन में कोई अच्छा सा लाभ हो।

मैंने अपने छोटे से जीवन में जन्म से लेकर अभी तक अपने घर पर रहकर ना कोई जैन पाठशाला से विशेष अध्ययन और न कोई पण्डित से शिक्षा ली मगर इन पुस्तकों को जिनको मैंने पढ़ा है कितनी शक्ति है इनमें? कि इनमें से यदि ''कण भर समान धर्म जीवन में आ गया तो मन भर ग्रन्थों से ज्यादा है।'' इसलिए मुझे उस कण भर धर्म के लालच में इन सारे शास्त्रों की अपेक्षा कुछ सुने हुये, पढ़े हुये विचारों को ध्यान में रखकर अपने भविष्य के बारे में सोचना होगा जिससे भविष्य उज्ज्वल बने और उन्नति का अवसर प्राप्त हो सके।

2. आत्म चिंतन

मैंने अपने घर में अपने माता-पिता वा भाईयों के साथ बचपन से अभी तक इतना सुखमय जीवन व्यतीत किया और बड़ी शान्ति के साथ मेरा बचपन व्यतीत हुआ और अभी होता जा रहा है। मेरे घर में मेरे माता-पिता में इतना ज्ञान है कि हर समय मुझे उनसे धर्म की बातें सुनने को मिलती रहती हैं। मेरा कैसा पुण्य का उदय होगा जो मुझे इतने ज्ञानी माता-पिता मिले।

मैं जब छोटा था तब मेरी आदत ही कुछ ऐसी थी कि जब घर में कोई धर्म की बातें होती तो मैं उन्हें दुहरा कर पूछता इसलिए मुझे कोई भी बात अच्छे से समझ में आ जाती थी। मैंने अपने घर में रखी हुई बहुत सी धर्म पुस्तकों की मरम्मत करके उनको पढ़ने और समझने की कोशिश की मगर मुझे उनको पढ़कर गहराई से चिन्तवन करने में भारी रुचि थी। और उन पुस्तकों में से मुझे अल्प ज्ञान के कारण कुछ तो समझ में आया जिससे मेरी रुचि अधिक बढ़ती गयी। लेकिन मेरे दिमाग में बहुत दिन पहले से कुछ अटपटे से प्रश्न उठते रहते थे और मेरा मन कुछ इस संसार को देखकर निराश सा होने लगा। मैं सोचता हूँ कि मेरा मन इस संसार में तथा मेरे कुटुम्बी, रिश्तेदारों और इस संसार के कुछ विचित्र रीतिरिवाजों, परम्पराओं, भावनाओं में कुछ बदलता हुआ और हटता हुआ सा मालूम पड़ता है। क्योंकि आज का हर एक मानव स्वार्थी और बड़ा लालची महसूस होता है। वह सिर्फ धन वैभव व भोगों के लालच में अपने जीवन को भूलकर और अपने माता-पिता, भाई, बहिन, रिश्तेदारों आदि की भलाई को भूलता जा रहा है और अपने जीवन का सुख इस धन पैसा और शरीर में मानकर आत्मा को भूल गया है।

क्रमशः.........

जैन धर्म और विज्ञान

-मुनि श्री 108आर्जवसागर जी महाराज

गतांक से आगे........

इस भारत देश में बड़ी-बड़ी ज्ञानी आत्मायें हुईं हैं। तीर्थंकर और तीर्थंकरों के काल में भी ऐसी महान आत्मायें हुयीं हैं। यह भारत देश महान आत्माओं का खजाना है। इस भारत देश में बहुत जगह सिद्ध क्षेत्र हैं, पर्वत, गुफाएँ आदि भी बड़े अतिशययुक्त धार्मिक क्षेत्र हैं। आज भी बहुत संख्या में तपस्वियों का विहार ऐसे क्षेत्र में हो रहा है। उनकी चर्या, साधना आदि हमें साक्षात् देखने को मिलती रहती है। आज भी सर्व परिग्रह त्याग करने पर बहुत शांति उनके जीवन में देखते हैं। साधारण लोगों के पास यह देखने को नहीं मिलती। वीतराग होने के बाद ही विज्ञान जागृत होता है ऐसा आज भी हम कह सकते हैं। जिस 'वि' विशिष्ट रूपेण ज्ञानं इति विज्ञान ऐसा कहा जाता है। वह विज्ञान ही अपने आत्म सुख का कारण है। क्योंकि हमारे पास जितने पदार्थों का संयोग है उतना ही हमारा मन उनकी तरफ बाहर की ओर दौड़ता है। हम हमारी शाश्वत् शांति सुख को छोड़कर मात्र लोक की परवस्तुओं में सुख को खोज रहे हैं। उन महान आत्माओं को शांति और सुख बाह्य के संयोग से नहीं मिला, उसको छोड़ने से ही मिला है। जितना छोड़ते हैं उतना शांति और सुख का लाभ होता है; इसका अर्थ क्या हुआ? तो परवस्तु, परिग्रह अशांति का कारण है। उत्कृष्ट वैभव वाले तीर्थंकरों ने भी उसको छोड़कर उससे मुख मोड़कर अपनी आत्मा में ध्यान लगाया, जंगल में रहकर आत्म साधना करके उस महान शांति को प्राप्त किया और वीतराग विज्ञान के आधार से सभी कर्मों को नष्टकर केवलज्ञान प्राप्त करके, मोक्ष सुख को पाया। जैसे दूध से घी बनकर बाद में वापस घी से दूध नहीं बनता वैसे ही यह आत्मा सभी कर्मों से छूटने के बाद मोक्ष जाने के बाद फिर वापस कभी इस संसार में नहीं आती। ये सब परिग्रह त्याग, आत्मध्यान और वीतराग विज्ञान का ही प्रभाव है।

इस भरतक्षेत्र में भगवान आदिनाथ प्रभु को आदि लेकर चौबीस तीर्थंकर हुये हैं। अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीरस्वामी हुये हैं। उनकी परम्परा में हुये आचार्य श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामी; वे द्वादशाङ्ग के ज्ञानी श्रेष्ठ आचार्य थे। उनका मंगल विहार दो हजार वर्ष पहले इस भारतदेश में हुआ। सम्राट चन्द्रगुप्त ने जिनको गुरु मानकर उनके चरणों में जिनदीक्षा धारण की थी और गुरु की सेवा में अनुरक्त थे। आचार्य भद्रबाहु स्वामी के प्रथम शिष्य विशाख मुनि थे। आचार्य भद्रबाहुस्वामी ने अन्तिम समय में अपना आचार्य पद विशाख मुनि को दे दिया। आचार्य होने के बाद उन्होंने तमिलनाडु की ओर विहार किया था। वहाँ के चोल, पाण्डव, पल्लव राजाओं के नम्र निवेदन से वहाँ लगभग बारह वर्ष रहे। अनेक भव्य आत्माओं का आत्म कल्याण हुआ। लोगों के व्रत, संयम और ज्ञान में बहुत वृद्धि हुई। आज भी उनकी धर्म प्रभावना और विहार के सम्बन्ध में वहाँ के पहाड़, गुफाओं और क्षेत्रों से बड़ा महत्व मालूम पड़ता है। तमिलनाडु में एक पहाड़ है, उसका नाम है 'यन्नायिरम् मलै' यन्नायिरम् मतलब आठ

हजार और मलै मतलब पर्वत अर्थात् आठ-आठ हजार मुनियों ने उस पहाड़ पर ध्यान किया था, ऐसा उस पहाड़ की गुफाओं से शय्याओं और दिगम्बर मूर्तियों से भी ज्ञात होता है।

जैनधर्म हमें त्याग करना सिखलाता है। राग ही दुःख का कारण है व त्याग सुख का साधन है। उन विशाखाचार्य की परम्परा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव हुये जिन्होंने समयसार आदि चौरासी पाहुड ग्रन्थ लिखे थे वे समयसार में कहते हैं कि-

रत्तो बंधदि कम्मं, मुंचदि जीवो विरागसंपण्णो।
एसो जिणोवदेसो तह्मा कम्मेसु मा रज्ज।।150॥ (स.सा.)

रागी जीव तो कर्मों का बंध करता है और वैराग्य को प्राप्त हुआ जीव कर्मों से मुक्त होता है। इसलिए हमें वैरागी बनना चाहिए। वैराग्य होने के बाद ही भेदविज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं। शरीर अलग है, आत्मा अलग है इसका नाम ही भेदविज्ञान है। जहाँ पर वैराग्य है वहीं पर समीचीन ज्ञान की प्राप्ति भी हो सकती है।

अपनी वस्तु क्या है ? जो हमेशा अपने साथ रहे वही अपनी वस्तु है दूसरी नहीं। पर वस्तु से मोह को दूर करना चाहिए। यह शरीर, यह कर्म मेरा नहीं है ऐसा चिन्तन करके ज्ञानी लोग इसे छोड़ते हैं। ज्ञान का लक्षण कहते हुए मूलाचार कहा गया है कि-

जेण रागाविरज्जेज्ज जेण सेये सु रज्जदि।
जेण मेत्तिं पभावेज्ज तं णाणं जिणसासणे ॥268।। (मूलाचार)

अर्थात् जिसके द्वारा विषय-राग छूट जाय, जिसके द्वारा श्रेयमार्ग रूप मोक्षमार्ग में रुचि जग जाय और जिसके द्वारा मैत्री की भावना जागृत हो वह जिनशासन में ज्ञान कहा गया है। इसी को हम विज्ञान कहते हैं। ''विशिष्ट रूपेण ज्ञानं इति विज्ञानं'' जो विशिष्ट ज्ञान को प्राप्त कराता है और जो अपनी वस्तु का परिचय कराता है वही विज्ञान है। अपनी वस्तु तो आत्मा है। इसमें ज्ञान (विज्ञान) दर्शन गुण हैं। यह शरीर जड़ है, पुद्गल है, नश्वर है, और हमारे साथ सदाकाल नहीं रहने वाला है ऐसा चिन्तन करने से शरीर से ममत्व छूट जाता है। शरीर से ममत्व छूटने पर शरीर सम्बन्धी जितने भी पदार्थ हैं उससे भी ममत्व छूट जाता है।

विज्ञान को वि-विराग+ज्ञान=विज्ञान ऐसा भी कह सकते हैं। विराग-वैराग्य से सम्बन्धित ज्ञान जिसमें राग से सम्बन्ध नहीं है वही विज्ञान है। उसी वीतराग विज्ञान से ही महान आत्माओं ने शांति और सुख को प्राप्त किया है और आगे भी प्राप्त करेंगे। वीतराग विज्ञान कभी भी बदलता नहीं है। वीतराग विज्ञान से केवल ज्ञान प्राप्त होता है। केवलज्ञान से इस लोक को जानकर जो सिद्धान्त प्ररुपित गया है वह सिद्धान्त भी बदलेगा नहीं। क्योंकि वह सीधा आत्मा से जाना जाता है, केवलज्ञान से जाना जाता है। इन्द्रियों से पदार्थों का पूरा ज्ञान नहीं हो सकता क्योंकि इन्द्रियज्ञान क्षायोपशमिक ज्ञान है और वह अनन्त को विषय नहीं करता।

आरातीय आचार्यों से वर्णित लोक स्वरूप को आज भी हम देख रहे हैं। पुण्य-पाप का फल क्या

है? इसको भी हम साक्षात् देखते हैं। एक ही परिवार में एक ही माता-पिता के दो बच्चे उत्पन्न होते हैं, एक काला है, एक गोरा है, एक सुन्दर है, एक असुन्दर है, इसका कारण क्या है? यह अपने-अपने पुण्य-पाप, रूप कर्म का ही फल है यह पुण्य पापकर्म कब किया होगा? तो माँ के पेट में तो नहीं बल्कि पूर्व जन्म में किया होगा। इसी तर्क से पुनर्जन्म व उसमें किये गये कर्म की भी सिद्धि हो जाती है जिस कारण से ही कोई सुखी है, कोई दु:खी है, कोई धनवान है, कोई गरीब है, ऐसे अनेक तरह से देखे जाते हैं। अज्ञानी लोग इन्द्रियों के विषयों में लीन होकर तरह-तरह के हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील और परिग्रह आदि पाप कर अशुभ कर्मों का बंध करते रहते हैं। इन पापों से दूर होकर अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि व्रतों का पालन करना चाहिए। यह आचरण ही सच्चे सुख को प्राप्त कराता है। ऐसा हमारे तीर्थंकरों ने उपदेश दिया है। जिसके साक्षात् फल को हम लोक में देख रहे हैं।

आज के विज्ञान को लौकिक विज्ञान, यन्त्र विज्ञान ऐसा कहते हैं। सामान्य लोगों की अपेक्षा यह ज्ञान श्रेष्ठ है। इसलिए विज्ञान कहते हैं। लेकिन जैनसिद्धान्त इसको विज्ञान नहीं मानता जैनसिद्धान्त तो विराग ज्ञान/विशिष्ट ज्ञान को ही विज्ञान कहता है। क्योंकि इसका विषय केवलज्ञान गम्य है।

आज का विज्ञान कितना बदल गया है देखो! जिस पुद्गल को माइक्रोस्कोप से जानकर परमाणु बतलाया या आज उसी को स्कन्ध बोलते हैं। वह ज्ञान और सूक्ष्म हो गया है। पहले उनको मालूम नहीं था कि वह स्कन्ध है मतलब कि धीरे-धीरे उनकी बातों में अन्तर होता जा रहा है।

लोक गोलाकार है ऐसा कहते थे। लेकिन आज के वैज्ञानिकों में कुछ लोग लेटेस्ट न्यूज में लोक गोलाकार नहीं है, थाली जैसे आकार में है ऐसा कहना स्वीकार करते हैं। अच्छा है, धीरे-धीरे वे लोग जैनसिद्धान्त की ओर आ रहे हैं। एक दिन वीतराग विज्ञान ही उन्हें पूर्ण ज्ञान एवं शांति का कारण बनेगा।

आज की भव्य बाल एवं युवा पीढ़ी के जीवन में धर्म संस्कार की बड़ी आवश्यकता है। आज की युवा पीढ़ी बहुत कुछ काम कर सकती है उनके पास बहुत ग्रहण शक्ति है। हम जैसा चाहें वैसा उनको बना सकते हैं। अगर हमने उनको धर्म के मार्ग में नहीं लाया और उन्हें धर्म के बारे में नहीं समझाया तो वे फॉरेन के संस्कारों में लीन हो जायेंगे। वहीं अच्छा लगेगा। जहाँ पञ्चेन्द्रिय के विषय भोगों को ही श्रेष्ठ मानेंगे। आज का लौकिक विज्ञान भी इन्हीं उपलब्धियों के पीछे जा रहा है।

अब जब हमने जान ही लिया कि लौकिक विज्ञान के सिद्धान्त भी हर समय बदलते ही रहते हैं। वस्तु कैसी है ? लोक कैसा है ? ऐसे निश्चित निर्णय पर नहीं पहुँच पाते हैं। लेकिन भगवान ने इस विषय को केवलज्ञान के माध्यम से जानकर लोक कैसा है इसका ऐसा निर्णयात्मक बोध हमें दिया है, जो कभी भी नहीं बदलेगा। धीरे-धीरे विज्ञान भी इस वीतराग विज्ञान की ओर आ रहा है। उसको मान रहा है। एक दिन पूरा-पूरा मानेगा। क्योंकि वह वीतराग विज्ञान पूर्ण ज्ञान रूप है। अत: वही ज्ञान सबको सुख, शांति प्रदान करता है।

क्रमशः........

आगम और अलंकारमय तीर्थोदय काव्य

पं. लालचन्द्र जैन 'राकेश' गंजबासौदा

गतांक से आगे........

कुष्टरोग से गलित देह को, ले जो निकले चर्या को।
राजा-रानी ने पड़िगाया, किया पूर्ण परिचर्या को॥
दान भक्ति नवधा से लेकर, दुर्गंधित फिर वमन किया।
नहीं ग्लानि कर उनने मुनि का, प्रक्षालन कर नमन किया॥ (पृष्ठ 23, पद्य 89)

वात्सल्य अंग के वर्णन में ''वात्सल्यरस'' की सुन्दर निष्पत्ति हुई है-

जैसे माता जन्में शिशु को, उर में रख सहलाती है।
गले लगाती गो बछड़े को, उत्तम दुग्ध पिलाती है॥ (पृष्ठ 28, पद्य 115)

आचार्य श्री अकम्पन के संघ पर आये उपसर्ग को दूर करने के लिए जब विष्णुकुमार मुनि श्री ने अपना विराट रूप बनाया, उसे पढ़कर पाठक ''विस्मय'' का अनुभव करता हुआ ''अद्‌भुत रस'' में डूब जाता है-

रूप बनाया बड़ा जिन्होंने, एक पैर रख मेरू पर।
मानुषोत्तर पर दूजा रख, फिर तीजा पग ले ऊपर॥
देव विमानों को शोभित कर, बलि पर रखा हराया था।
विष्णुमुनि ने कष्ट दूर कर, पूर्व मार्ग अपनाया था॥ (पद्य-119, पृष्ठ-29)

''प्रभावना अंग'' के वर्णन में भी अद्‌भुत रस का सुन्दर परिपाक हुआ है-

मुनिवचन सुन विद्याधरजन, उर्विला के जिन रथ की।
नभ में ऊपर यात्रा लेकर, की जयजय ध्वनि जिन रथ की॥ (पृष्ठ-31, पद्य-113)

''स्थितिकरण अंग'' के प्रसंग वर्णन में मुनि वारिषेण के 'माध्यम' से संयोग शृंगार एवं वियोग गार का उल्लेख भी मिलता है। (पृष्ठ- 27-28, पद्य- 109-113)

इसी प्रकार वीर रस, करुणा रस इत्यादि अन्य रसों का वर्णन भी यथास्थान तीर्थोदय काव्य में हुआ है। वीर रस का उदाहरण देखिये-

भद्रबुद्धि के धारक थे वे समन्तभद्राचार्य गुरो।
सम्यग्दर्शन की महिमा को, प्रकट किया है आर्य गुरो।
मिथ्यामत के खण्डन में की, सिंह गर्जना तुमने है।
पूजूँ गुरुवर समकित मणि से, लोक सजाया तुमने है॥ (पृष्ट-4, पद्य-9)

गुण संयोजना-

''तीर्थोदय काव्य'' प्रासाद एवं माधुर्य गुण का काव्य है। जैसे स्वच्छ जल में भीतर पड़ी हुई वस्तु

स्पष्ट दिखाई देती है वैसे ही प्रासाद गुण युक्त रचनाओं में उनका निहित अर्थ पढ़ते ही समझ में आ जाता है। ''तीर्थोदय-काव्य'' का यह वैशिष्ट्य है कि रचना इतनी सरल है कि पढ़ते ही अर्थ आत्मसात् हो जाता है।

यथा-

देह अचेतन, मैं हूँ चेतन, पर पदार्थ ना मेरे हैं।
क्यों इन सब में मोह करूँ मैं, भव बंधन के घेरे हैं॥
पुद्गल सारे रहे अशाश्वत, राग-द्वेष के कारण हैं।
दर्श-ज्ञानमय आतम मेरी, शाश्वत सुख का साधन हैं॥ (पृष्ठ-41, पद्य 179)

माधुर्यगुणयुक्त रचनाओं में कर्ममधुर वर्णों का प्रयोग होता है। क वर्ग ट वर्ग जैसे कर्णकटु वर्णों का नहीं। ''तीर्थोदय-काव्य'' में अधिकतर कठोर वर्णों का अभाव है।

जैसे-

रही भारती सरस्वती जो, तथा शारदा माता हैं।
नहीं धारती शृंगारों को, वीतराग शिवदाता हैं॥ (पृष्ठ-134, पद्य- 590)

शब्द शक्तियों का प्रयोग-

शब्दों में अपूर्वशक्ति होती है। उनका सुष्ठु एवं सुनियोजित प्रयोग अर्थ की गरिमा को बढ़ा देता है, इसे साहित्यिक भाषा में ''शब्द शक्ति'' की संज्ञा दी जाती है। शब्द शक्तियाँ तीन होती हैं- अभिधा, लक्षणा और व्यंजना। अभिधा लोक प्रचलित अर्थ को प्रकट करती है तो लक्षणा सांकेतिक या लाक्षणिक अर्थ को, व्यंजना शक्ति व्यंग्य अर्थ को प्रकट करती है।

''तीर्थोदय-काव्य'' में यथास्थान तीनों शक्तियों का प्रयोग किया गया है। चूंकि यह काव्य सैद्धान्तिक तथ्यों को प्रतिपादित करता है अतः इसमें अभिधाशक्ति की मुख्यता है। यथा-(वपु-रूप मद का वर्णन)

सुडौल सुन्दर मेरा तन यह, जग में शोभा पाता है।
लगता नहीं दूसरा कोई, मेरे सम जो भाता है॥
मात्र देखते ही देखो सब, क्षण में मोहित होते हैं।
धारे वपु मद सोचे मुझ सम, देव भी कुछ न होते हैं॥ (पृष्ठ-32, पद्य-136)

पारिभाषिक अर्थ के साथ ही यह जानना भी आवश्यक है कि आचार्य का लक्ष्यार्थ क्या है? बिना लक्ष्यार्थ के समझे सिद्धान्त का सही मर्म समझ में नहीं आ सकता। ''तीर्थोदय-काव्य'' में लक्षणा शक्ति के द्वारा प्रतीकों एवं संकेतों के माध्यम से लक्ष्यार्थ को भी स्पष्ट किया गया है। यथा-

षोडशकारण भावना, जानों मेरु समान।
सब 'पर्वत' नीचे दिखे, दें शिवपद शुभ जान॥ (षोडशभावना सार, पृष्ठ-150, पद्य-642)
नहीं जगत में मेरे सादृश, ज्ञानवान पंडित कोई।
नहीं महाकवि, शास्त्री मुझ सम, जग में और दिखे कोई॥

जो भी दिखते आज सभी है, ''जुगनू'' सम ''सूरज'' आगे।
धार ज्ञान मद मिथ्यात्वी वह और प्रशंसा जो मांगे ॥ (ज्ञानमद, पृष्ठ-31, पद्य-128)

उक्त पद्यों में मेरु, पर्वत, जुगनू, सूरज इत्यादि 'शब्दों' का लाक्षणिक अर्थ ग्रहण करना चाहिए।

सम्यग्दर्शन रहित साधु बनाम स्वादु का कथन व्यंजना शक्ति द्वारा अत्यन्त प्रभावक बन गया है-

गंध बिना वह फूल कभी भी, शिखर बिना वह जिन आलय।
नहीं शोभता जैसे सद्गुरु, बिना कभी वह विद्यालय ॥
उसी तरह बिन सम्यग्दर्शन, लिंग साधु का कभी कहाँ।
पाता शोभा नहीं साधु वह, रहा स्वादु है अभी वहाँ ॥ (पृष्ठ-43, पद्य-185)

इस प्रकार हम देखते हैं कि ''तीर्थोदय-काव्य'' का भावपक्ष पूर्ण समृद्ध एवं प्रभावक है।

''तीर्थोदय-काव्य'' का कलापक्ष-

भाषागत संस्कार और सौन्दर्य-

भाषा, भावों की अभिव्यक्ति का सबसे अधिक सशक्त माध्यम है। भाषा के द्वारा कृतिकार के व्यक्तित्व की गरिमा का आभास होता है। जिस रचनाकार के द्वारा जितने सार्थक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उसकी अभिव्यक्ति भी उतनी ही सशक्त और प्रगाढ़ होती है। भाषा, भावों की संवाहिका है क्योंकि भाव, भाषा के रथ पर बैठकर ही अभिव्यक्ति की यात्रा करते हैं।

''तीर्थोदय-काव्य'' की भाषा शुद्ध खड़ी बोली हिन्दी है। उसमें मधुरता है, प्रवाह है, प्रभाव है, सरलता, सहजता एवं प्राकृतिक सौन्दर्य है। भाषा भावों को वहन करने में पूर्ण सक्षम तथा विषय एवं भावों के अनुकूल है।

मुनिश्री का शब्दकोष अत्यन्त समृद्ध है। 'रमता जोगी, बहता पानी' के कारण आपके भाषा भंडार में यत्र-तत्र-सर्वत्र विविध स्थानों के प्रचलित शब्द समाविष्ट हो गये हैं। आपका जन्म फुटेराकलाँ जिला-दमोह में हुआ है। अतः बुन्देली भाषा का सौन्दर्य तो भाषा में है ही किन्तु खड़ी बोली हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, तमिल, कन्नड़ एवं मराठी पर भी आपका असाधारण अधिकार होने से आपकी अभिव्यक्ति में इन्द्रधनुषी सौन्दर्य आ जाता है।

''तीर्थोदय-काव्य'' की भाषा परिमार्जित संस्कृतनिष्ठ होते हुये भी उसमें बोधगम्यता का गुण सर्वत्र विद्यमान है। यथा-

सदा भारती जगत् तारती, जिनवाणी मंगलकारी।
मोक्षमार्ग में जिन सेवक को, सदा रही संकट हारी ॥
गंध सहित उन पुष्पों पर ज्यों, भ्रमर नृत्य करते संगीत।
अनेकान्तमय जिनवाणी में, शिव पाने में गाऊँ गीत ॥ (पृष्ठ-3, पद्य-4)

भाषा में तत्सम एवं तद्भव शब्दों का मणिकांचन संयोग अभिव्यक्ति को सौन्दर्य प्रदान करता है। यथा-

सदा दिगम्बर अम्बर त्यागी, जंगल में जो वास करें।
विषयवासना दूर भागती, क्योंकि चेतन वास करें ॥ (पृष्ठ- 131, पद्य- 578)

भावों को अभिव्यक्ति के लिए एक भी प्रतीक्षा नहीं करना पड़ती अपितु ज्यों ही भाव उत्पन्न होते हैं वैसे ही शब्दों का भंडार उपस्थित हो उन्हें अभिव्यक्ति प्रदान कर देता है क्योंकि मुनिश्री का भाषा पर असाधारण अधिकार है।

भाषा में समय-समय पर कहावतों, मुहावरों एवं सूक्तियों के प्रयोग ने अभिव्यक्ति को और अधिक रमणीयता प्रदान कर दी है-

सूर्य किरण की चकाचौंध पर, जैसे आँखें ना टिकती। (पृष्ठ- 141, पद्य- 604)

सदा पाप से घृणा करो तुम, पापी से नहीं घृणा करो। (पृष्ठ-26, पद्य- 106)

हस्ति का स्नान समझलो, रज से पुनः नहाता है। (पृष्ठ-91, पद्य-390)

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सामान्य विषयों को काव्य साँचे में ढालना सरल है किन्तु सैद्धान्तिक, दार्शनिक विषयों को, जिनकी शब्द-सम्पदा विशिष्ट अभिव्यक्ति चाहती है, को प्रकट करना दुष्कर कार्य है। ऐसे विषयों एवं पारिभाषिक शब्दों के साथ न्याय कोई कुशल कवि या आगम का मर्मज्ञ आचार्य ही कर सकता है। मैं अत्यंत दृढ़ता एवं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि परमपूज्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज की सधी एवं सुधी लेखनी ने यह चमत्कार अत्यन्त खूबी के साथ कर दिखाया है।

संक्षेपेण कहा जा सकता है कि मुनि श्री का भाषा पर असाधारण अधिकार है वे बहुश्रुत, बहुज्ञ, बहुभाषा विद् हैं एवं सरलता, सहजता और सुबोधता उनकी भाषा के स्थायी गुण हैं।

अलंकार योजना-

अलंकार काव्य के बाह्य शोभाकारक धर्म हैं। ये वाणी के भूषण कहलाते हैं। इनके द्वारा अभिव्यक्ति की स्पष्टता, भावों की प्रेषणीयता एवं भाषा में सौन्दर्य का सम्पादन होता है। अनेक आचार्यों ने अलंकारों को काव्य का धर्म मानकर उनकी अनिवार्यता प्रकट करते हुए कहा है कि ''भूषण बिन ना राजहीं, कविता वनिता मित्र।''

''तीर्थोदय-काव्य'' में अलंकारों की छटा सर्वत्र बिखरी हुई है। विशेषता यह है कि ये अलंकार काव्य में स्वभाविक रूपेण विद्यमान हैं तथा अभिव्यक्ति के सौन्दर्य में इन्होंने महती भूमिका का निर्वाह किया है। काव्य में ये अलंकार कभी अर्थ सौन्दर्य को बढ़ाते हैं तो कभी शब्द सौन्दर्य को। कहीं-कहीं इन अलंकारों ने शब्द और अर्थ दोनों के ही सौन्दर्य में श्रीवृद्धि की है। प्रयुक्त प्रमुख अलंकारों का विवेचन इस प्रकार है।

अनुप्रास अलंकार - (शब्दालंकार)

सदा भारती जगत तारती, जिनवाणी मंगलकारी। (पद्य- 4)

धन्य-धन्य मुनि भारत भू-पर, श्री विशाखाचार्य गुणी। (पद्य-7)

अर्थालंकार-

उपमा अलंकार-

तीर्थंकर प्रभु से गंगा सम, निकली सम्यक् जिनवाणी। (पद्य- 5)

क्रमश : ....

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक से आगे ....

अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

आद्युत्तरसर्वधनानयनसूत्रम्—

पदहतमुखमादिधनं व्येकपदार्धघ्नचयगुणो गच्छः ।
उत्तरधनं[1] तयोर्योगो धनमूनोत्तरं मुखेऽन्त्यधने ।।६३।।

अन्त्यधनमध्यधनसर्वधनानयनसूत्रम्—

चयगुणितैकोनपदं[2] साद्यन्त्यधनं तदादियोगार्धम् । मध्यधनं तत्पदवधमुद्दिष्टं सर्वसंकलितम् ।।६४।।

१ M तदूना सैक (ब ?) पदाप्ता युतिः प्रभावः । २ यह श्लोक M में छूट गया है ।

आदिधन, उत्तरधन और सर्वधन निकालने का नियम—

प्रथम पद में श्रेढि के पदों की संख्या का गुणन करने से प्राप्त राशि आदिधन कहलाती है। प्रचय द्वारा गुणित श्रेढि के पदों की संख्या तथा एक कम पदों की संख्या की आधी राशि का गुणनफल उत्तर धन कहलाता है। इन दोनों का योग सर्वधन अर्थात् समस्त श्रेढि के पदों का योग होता है। वही ऐसी श्रेढि के योग के तुल्य भी होता है जो श्रेढि के पदों का क्रम उलट दिया जाने से प्राप्त होती है, जहां अंतिम पद प्रथम पद हो जाता है तथा प्रचय ऋणात्मक हो जाता है ।।६३।।

अन्त्यधन, मध्यधन तथा सर्वधन निकालने की विधि—

श्रेढि के पदों की संख्या एक द्वारा ह्रासित की जाती है और प्राप्त संख्या प्रचय द्वारा गुणित की जाती है। तब इसे प्रथम पद में जोड़ने पर अन्त्यधन प्राप्त होता है। अन्त्यधन और प्रथम पद के योग की आधी राशि मध्यधन कहलाती है। इस मध्यधन और श्रेढि के पदों की संख्या का गुणनफल, श्रेढि के समस्त पदों का योग होता है ।।६४।।

(६३–६४) इन नियमों में समान्तर श्रेढि का प्रत्येक पद, प्रथम पद में प्रचय का गुणक जोड़ने पर प्राप्त हुआ माना जाता है। इस गुणक का मान श्रेढि में पद विशेष की स्थिति पर निर्भर रहता है। इस अवधारणा के अनुसार हमें श्रेढि के प्रत्येक पद में प्रथम पद के साथ-साथ प्रचय का गुणक भी निकालना पड़ता है। इस तरह प्राप्त प्रथम पदों के योग को आदिधन कहते हैं। प्रचय के ऐसे गुणकों के योग को उत्तरधन कहते हैं। सर्वधन जो कि इन दोनों का योग होता है, श्रेढि का भी योग होता है। अन्त्यधन, समान्तर श्रेढि का अंतिम पद होता है। मध्यधन का अर्थ मध्यपद होता है जो इस श्रेढि के प्रथम पद और अंतिम पद का समान्तर-मध्यक (arithmetical mean) होता है। इस तरह, जब श्रेढि में (२ न + १) पद होते हैं तब (न + १) वाँ पद मध्यधन कहलाता है। परंतु, जब २न पद होते हैं, तो (न) वें और (न + १) वें पद के समान्तर-मध्यक के तुल्य मध्यधन होता है। इस तरह, (१) आदिधन $= \text{न} \times \text{अ}$; (२) उत्तरधन $= \frac{\text{न} - १}{२} \times \text{न} \times \text{ब}$; (३) अन्त्यधन $= (\text{न} - १) \times \text{ब} + \text{अ}$;

(४) मध्यधन $= \frac{\{(\text{न} - १)\text{ब} + \text{अ}\} + \text{अ}}{२}$; (५) सर्वधन $= (१) + (२) = (\text{न} + \text{अ}) + \left(\frac{\text{न} - १}{२} \times \text{न} \times \text{ब}\right)$;

अथवा, सर्वधन $= (४) \times \text{न} = \text{न} \times \frac{\{(\text{न} - १)\ \text{ब} + \text{अ}\} + \text{अ}}{२}$ होता है।

आगे यह बिलकुल स्पष्ट है कि ऋणात्मक प्रचय वाली समान्तर श्रेढि धनात्मक प्रचय वाली समान्तर श्रेढि में बदल जाती है जब कि पदों का क्रम पूरी तरह उल्टाया जाता है जिससे प्रथम पद अंतिम पद हो जाता है।

अत्रोद्देशकः

एकादिदशान्ताद्यास्तावत्प्रचयास्समर्चयन्ति धनम् ।
वणिजो दश दश गच्छास्तेषां संकलितमाकलय ॥६५॥
द्विमुखत्रिचयैर्मणिभिः प्रानर्च श्रावकोत्तमः कश्चित् । पञ्चवसतीरमीषां का संख्या ब्रूहि गणितज्ञ ॥६६॥
आदिस्त्रयश्चयोऽष्टौ द्वादश गच्छस्त्रयोऽपि रूपेण । आ सप्तकात्प्रवृद्धाः सर्वेषां गणक भण गणितम् ॥६७॥
द्विकृतिमुखं चयोऽष्टौ नगरसहस्रे समर्चितं गणितम् ।
गणिताब्धिसमुत्तरणे बाहुबलिन्[1] त्वं समाचक्ष्व ॥६८॥

गच्छानयनसूत्रम्—

अष्टोत्तरगुणराशेर्द्विगुणाद्युत्तरविशेषकृतिसहितात् । मूलं चययुतमर्धितमाद्यूनं चयहृतं गच्छः ॥६९॥

प्रकारान्तरेण गच्छानयनसूत्रम्—

अष्टोत्तरगुणराशेर्द्विगुणाद्युत्तरविशेषकृतिसहितात् । मूलं क्षेपपदोनं दलितं चयभाजितं गच्छः ॥७०॥

१ M बली ।

उदाहरणार्थ प्रश्न

दस व्यापारियों में से प्रत्येक समान्तर श्रेढि में संकलित धन दान करता है । दस श्रेढियों के प्रथम पद एक से लेकर दस तक हैं, और प्रत्येक श्रेढि में प्रचय उतना ही है जितनी कि उनकी प्रथम पद राशि । प्रत्येक श्रेढि के पदों की संख्या दस है । उन श्रेढियों के योगों की गणना करो ॥६५॥ एक श्रेष्ठ श्रावक एक-एक कर पाँच मन्दिरों में २ मणियों से आरम्भ कर उत्तरोत्तर ३ मणि बढ़ाता हुआ भेंट चढ़ाता है । हे गणितज्ञ ! कहो कि उनकी कुल संख्या क्या है ? ॥६६॥ प्रथम पद ३ है; प्रचय ८ है; और पदों की संख्या १२ है । ये तीनों राशियाँ क्रम से एक द्वारा बढ़ाई जाती हैं जब तक कि ७ श्रेढियाँ प्राप्त नहीं होतीं । हे गणितज्ञ ! इन सब श्रेढियों के योगों को प्राप्त करो ॥६७॥ हे गणितरूपी समुद्र को भुजाओं द्वारा तरने में समर्थ ! बतलाओ कि १००० नगरों में की जाने वाली समस्त भेंटों का मान क्या होगा, जब कि भेंट ४ से आरम्भ की जाती है और उत्तरोत्तर ८ से वृद्धि को प्राप्त होती है ॥६८॥

समान्तर श्रेढि के पदों की संख्या (गच्छ) निकालने का नियम—

(प्रथम पद की दुगुनी) राशि और प्रचय के अन्तर के वर्ग में श्रेढि के योग द्वारा गुणित प्रचय की आठगुनी राशि जोड़ते हैं । प्राप्त योगफल के वर्गमूल में प्रचय जोड़ते हैं और परिणामी राशि आधी करते हैं । इसे प्रथम पद द्वारा ह्रासित कर प्रचय द्वारा विभाजित करते हैं तो श्रेढि के पदों की संख्या प्राप्त होती है ॥६९॥

दूसरी रीति द्वारा पदों की संख्या निकालने का नियम—

(प्रथम पद की दुगुनी) राशि और प्रचय के अन्तर के वर्ग में, श्रेढि के योग द्वारा गुणित प्रचय की अठगुनी राशि जोड़कर प्राप्त योगफल के वर्गमूल में से क्षेपपद को घटाते हैं । परिणामी राशि को आधा करते हैं । इसे प्रचय द्वारा विभाजित करने पर श्रेढि के पदों की संख्या प्राप्त होती है ॥७०॥

(६६) श्रावक जैनधर्म के गृहस्थ धर्म के गृहस्थ धर्म का पालन करने वाला होता है, जो केवल श्रवण करता है अर्थात् धर्म या कर्तव्य के विषय में सुनता और सीखता है । सामान्यतः पाक्षिक श्रावक को मिथ्यात्व, अन्याय एवं अभक्ष्य का त्याग होता है ।

(६९) बीजगणित से यह नियम इस भाँति प्ररूपित होगा—

$$\frac{\frac{\sqrt{(२अ - ब)^{२} + ८ब य} + ब}{२} - अ}{ब} = न$$

(७०) (प्रथम पद की दुगुनी) राशि और प्रचय के अंतर की आधी राशि क्षेपपद कहलाती है । अर्थात्, $\frac{२अ - ब}{२}$. यह स्पष्ट है कि इस सूत्र में क्षेपपद का उल्लेख होने से पिछले सूत्र से मात्र उल्लेख में भिन्नता है ।

मुक्ति के योग्य द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव

- शिवचरनलाल जैन मैनपुरी

जे जाया झाणग्गिए कम्म कलंक डहेवि।
णिच्चु णिरंजणु णाणुमय ले परमप्प णवेवि॥
परमात्मप्रकाश 1॥

गतांक से आगे ....

ज्ञातव्य है कि दर्शन मोह का क्षपण भी मुक्ति के मार्ग में एक मुख्य घटक है।

मुक्ति की प्राप्ति रात्रि या दिन के किसी भी अवसर पर हो सकती है। यहाँ केवली समुद्घात द्वारा जो जीव मुक्ति प्राप्त करते हैं, इस विषय में गवेषणा करते हैं। निम्न उल्लेख दृष्टव्य है-

1. छम्मासा उवसेसे उप्पण्णं जस्स केवलं णाणं। ससमुग्घाओ सिज्झइ सेसा भज्जा समुग्घाए॥

2. जेसिं आउसमाइं णामा गोदाणि वेयणीयं च। ते अकय समुग्घाया उच्चंतियरे समुग्घाए॥ षट्.खण्डागम 1-1/60

-आयु में छः माह शेष रहने पर जिन्हें केवलज्ञान उत्पन्न होता है, वे केवली समुद्घात से सिद्ध होते हैं। समुद्घात के विषय में शेष भजनीय हैं।

ज्ञातव्य है कि मूल शरीर को न छोड़कर आत्मा के प्रदेश शरीर से बाहर निकलते हैं, इस अवस्था को समुद्घात कहते हैं। समुद्घात सात प्रकार के हैं -

1. कषाय 2. वेदना 3. विक्रिया 4. आहारक 5. तैजस (शुभ-अशुभ) 6. मारणान्तिक 7. केवली समुद्घात।

समुद्घात के द्वारा परकाया प्रवेश भी संभावित है।

यहाँ यह भी दृष्टव्य है कि मोक्ष प्राप्ति का कोई काल नियम नहीं है। जब जीव तपश्चरण आदि के द्वारा अकाल में ही कर्मों की अविपाक निर्जरा करता है तब मोक्ष मिलता है। काल के अधीन एवं निश्चित या क्रमबद्धता के आधार पर मोक्ष होगा यह मान्यता आगम के विरुद्ध है। यह विचार पुरुषार्थ हीनता का द्योतक है। बिना किसी उपाय के स्वकाल में अपने आप होनहार से मोक्ष मिल जावेगा तथा चारित्रमोह का जब उपशम-क्षय आदि होंगे तो चारित्र भी स्वतः हो जावेगा यह चिन्तन अध्यात्म ज्ञान का दुरुपयोग है। मुक्ति हेतु चतुष्टय में भाव सर्वप्रधान है उसकी दृष्टि से ऊहापोह किया जाता है।

मुक्ति योग्य साक्षात् भाव

प्रत्युत्पन्नग्राही नय से मुक्ति से एक समय पूर्व जो कारण समयसार रूप क्षायिक भाव है, वह

मोक्ष का हेतु है। इसमें चौदहवें गुणस्थान का अन्तिम समय अभीष्ट है। इस चरम समय में व्युपरतक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यान है। उससे इस गुणस्थान की अवधि में जो कुछ चारित्र में अघातिया कर्मों के उदय से किंचित् न्यूनता है वह समाप्त होकर परम यथाख्यात चारित्र प्रकट होता है वह मुक्ति योग्य साक्षात् कारण रूप भाव है। इस भाव को अनेक संज्ञाओं से अभिहित किया जा सकता है। जैसे निश्चयमोक्षमार्ग, शुद्धात्मदर्शन, समस्त कर्म क्षयकारण, परमाद्वैत, परम स्वास्थ्य, परम समरसीभाव, परमभेदज्ञान आदि।

मुक्ति के योग्य परम्परा भाव

जीव के असाधारण पाँच भाव हैं। 1. औपशामिक 2. क्षायिक 3. मिश्र 4. औदयिक 5. पारिणामिक। इनमें क्षायिक, मिश्र व औपशमिक भाव मोक्ष के कारण हैं। औदयिक भाव बन्ध के कारण हैं तथा पारिणामिक भाव निष्क्रिय हैं। ज्ञातव्य है कि मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र संसार के हेतु हैं तथा सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र रूप रत्नत्रय मोक्ष का कारण है। औपशमिक भाव दर्शन एवं चारित्र हैं। क्षायिक भाव ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य रूप नौ प्रकार हैं। इसे अनन्त चतुष्टय और पाँच क्षायिक लब्धि के रूप में कहा जाता है। क्षायोपशमिक भाव, चार ज्ञान, तीन अज्ञान, तीन दर्शन, पाँच लब्धि, सम्यक्त्व, चारित्र एवं संयमासंयम के भेद से 18प्रकार का है। इससे प्रकट होता है कि उपर्युक्त तीन भावों से अपेक्षित रूप से मुक्ति प्राप्त होती है। कहा भी है-

ओदइया बन्धयरा उवसम खय मिस्सया य मोक्खयरा।

भावो दु पारिणामिओ णिक्किरिया करणोभय वज्जियो होंति ॥ धवल पु. 7 पृ. 9

यहाँ औदयिक भावों को बन्ध का कारण बताया है, किन्तु इसमें यह विवक्षा भी है कि शुभ राग, प्रशस्त राग को मोक्ष के योग्य भाव भी स्वीकार किया गया है। इसमें मंगलपना भी है। प्रायः सभी ग्रन्थों में यह प्रकट होता है। जिनेन्द्र भक्ति, शील, तप, व्रत, वैय्यावृत्य, दान आदि में जो पुण्य भाव है, वे ही विशुद्ध भाव है, वह रागादि की हीनता करने में कारण है, वह मोक्षमार्ग में सहायक है। परम्परा से मोक्ष का कारण है, व्यवहार मोक्षमार्ग है। यह अपेक्षा दृष्टि है। यद्यपि इससे बन्ध भी होता है तथापि इससे संवर और निर्जरा भी होती है। आचार्य वीरसेन स्वामी ने स्पष्ट लिखा है-

केन मंगलं औदयिकादि भावैः मंगलं। धवला 1/1

भगवान् जिनेन्द्रदेव के दर्शन से निकाचित बन्ध का नाश तक बताया है। तत्त्वार्थसूत्र में भी संवराधिकार में ''स गुप्ति समिति धर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः'' सूत्र से यह स्पष्ट है।

बन्ध के चार प्रत्यय हैं- मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग (अपेक्षा भेद से प्रमाद भी)। इनके विपरीत सम्यक्त्व, संयम, अकषाय भाव और अयोग भाव हैं। ये मोक्ष के हेतु हैं। गुणश्रेणी निर्जरा

के क्रम से गुणस्थानों की दृष्टि से सम्यक्त्वोत्पत्ति, देशसंयम, संयम, अनन्तानुबन्धी विसंयोजन, दर्शनमोह क्षपण, चारित्रमोहोपशम, उपशान्तकषाय, चारित्रमोह का क्षपण, क्षीणकषाय व सयोगकेवली के परिणाम मोक्ष के प्रत्यय हैं।

ज्ञान की एकाग्रता को ध्यान कहते हैं। ध्यान मोक्ष हेतुओं में प्रधान है। यह धर्मध्यान और शुक्लध्यान के रूप में मुक्ति की योग्यता प्रकट करता है। प्रवचनसार में आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने चारित्र को वास्तव में धर्म कहा है वह समभाव रूप है। मोह-क्षोभ से रहित जब आत्मा का शुद्ध परिणाम होता है वह वीतराग भाव मुक्ति के कारण रूप में परिगणित है। यह यथाख्यात चारित्र रूप निश्चय मोक्षमार्ग है। इसे निर्विकल्प शुद्ध आत्मानुभूति, शुद्धोपयोग आदि संज्ञायें प्राप्त हैं। यह श्रमण को ही संभव है। चारित्र अथवा संयम के पाँच भेद हैं- सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसाम्पराय तथा यथाख्यात। भूतपूर्वनय की अपेक्षा, परम्परा की दृष्टि से चार संयम व साक्षात् दृष्टि से यथाख्यात में भी परमयथाख्यात चारित्र रूप भावों से मुक्ति प्राप्त होती है। ज्ञान की दृष्टि से देखें तो क्षायिक ज्ञान एवं श्रुतज्ञान से मुक्ति साध्य है।

व्यवहार-निश्चय मोक्षमार्ग

सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र की एकता मोक्षमार्ग है। यह दो प्रकार है- 1. व्यवहार 2. निश्चय। सच्चे देव, शास्त्र, गुरु, धर्म का यथार्थ श्रद्धान एवं जीव, अजीव, आस्रव, बन्ध, संवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य, पाप इन नव पदार्थों का यथार्थ प्रतीति व्यवहार सम्यक्त्व है। पुण्य, पाप को आस्रव बन्ध में समाहित करने से सात तत्त्वों की अपेक्षा है, पर के आश्रय को लेकर या भेद और उपचार के द्वारा जो निरुपण करता है वह व्यवहार नय है, अतः व्यवहार सम्यग्दर्शन भी पर द्रव्य रूप पुद्गल के सम्बन्ध से सार्थक होता है। इसके अनुसार आराध्य-आराधक, वन्द्य-वंदक, श्रद्धेय-श्रद्धाकर्ता भिन्न-भिन्न होते हैं। भिन्न कर्ता कर्म, कार्य-कारण आदि सभी इसके विषय हैं। व्यवहार सम्यग्दृष्टि जीव सराग सम्यग्दृष्टि है। उसके लक्षण प्रशम, संवेग, आस्तिक्य और अनुकम्पा हैं। इन्हीं भावों के बल से वह मोक्षमार्ग पर आरूढ़ होता है। निश्चय सम्यग्दर्शन का भाव आत्माश्रित ही है। कहा भी है-

अप्पा अप्पम्मि रओ सम्माइट्ठी हवेइ फुडु जीवो।
जाणइ तं सण्णाणं चरदिह चारित्त मग्गो त्ति ॥
दर्शनमात्मविनिश्चितिरात्मपरिज्ञानमिष्यते बोधः।
स्थितिरात्मनि चारित्रं कुत एतेभ्यो भवति बन्धः ॥ पुरुषार्थसिद्धिउपाय 216

उपर्युक्त के अनुसार पर द्रव्यों से भिन्न अपने आत्मस्वरूप में रुचि सम्यग्दर्शन, आत्मस्वरूप का संशय, विमोह, विभ्रम रहित परिज्ञान और आत्मस्वरूप में स्थिति सम्यक्चारित्र है। यहाँ यह ज्ञातव्य है

कि निश्चय मोक्षमार्ग साध्य है और व्यवहार मोक्षमार्ग साधन है। व्यवहार मोक्षमार्ग पूर्वक निश्चय मोक्षमार्ग होता है। पृथक् पृथक् से रत्नत्रय के अवयव भी इसी प्रकार समझने चाहिए। अर्थात् व्यवहार सम्यग्दर्शन, निश्चय सम्यग्दर्शन का कारण है, व्यवहार सम्यग्ज्ञान, निश्चय सम्यग्ज्ञान का हेतु है और व्यवहार सम्यक्चारित्र निश्चय सम्यक्चारित्र का साधन है। प्रत्यक्ष, अनुमान और आगम तीनों प्रमाणों से व्यवहार और निश्चय मोक्षमार्ग, साधन व साध्य रूप में हैं, दृष्टव्य है–

निश्चय व्यवहाराभ्यां मोक्षमार्गो द्विधा स्थितः।
तत्राद्यः साध्यरूपः स्याद् द्वितीयस्तस्यसाधनः॥ (तत्त्वार्थसार)
णो ववहारेण विणा णिच्छयसिद्धी कया वि णिछिट्ठा।
साहण हेऊ जम्हा तम्हा य सो भणिय ववहारो ॥ (नयचक्र)
जइ जिणमयं पवज्जह ता मा ववहारणिच्चाए मुयह।
एक्के ण विणा छिज्जइ तित्थं अण्णेण उण तच्चं॥

अर्थ– मोक्षमार्ग दो प्रकार का है, 1. निश्चय 2. व्यवहार। निश्चय साध्य है और व्यवहार उसका साधन है। व्यवहार के बिना निश्चय की सिद्धि कदापि निर्दिष्ट नहीं की गई है। साधन हेतु होने से ही उसे व्यवहार कहा है। यदि तुम जिनमत की प्रभावना करना चाहते हो तो व्यवहार और निश्चय इनमें में किसी का भी परित्याग न करो। यदि निश्चय को छोड़ोगे तो तत्त्व का नाश होगा और व्यवहार को छोड़ने से तीर्थ का ही नाश होगा।

अशुभ से निवृत्ति और शुभ में प्रवृत्ति व्यवहार सम्यक्चारित्र है वह व्रत, समिति, गुप्ति रूप है। जहाँ न तो कुछ मन से सोचा जाता है न वाणी का प्रयोग होता है और शरीर से भी कोई चेष्टा नहीं की जाती है वह आत्मस्थिति रूप, निश्चय गुप्ति रूप निश्चय सम्यक् चारित्र है।

उपर्युक्त विवेचन से यह प्रकट होता है कि रत्नत्रय रूप मोक्षमार्गीय भाव एवं तद्नुरूप क्रिया मिलकर मुक्ति की योग्यता उत्पन्न की जाती है। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र मोक्ष के नियामक कारण हैं। मुक्ति योग्य भावों की जो भी गवेषणा होगी वह सब रत्नत्रय में ही समाविष्ट है। मोक्षमार्ग में गति; भेद से अभेद की, सविकल्प से निर्विकल्प दशा की ओर है। जब योगी का उपयोग शुद्ध, अभेद और स्थिर हो जाता है तो मोहनीय पर विजय प्राप्ति पूर्वक केवलज्ञान की उपलब्धि हो जाती है। सकल परमात्मा स्वरूप प्रकट हो जाता है। पुनश्च अपेक्षित रूप में जीवन्मुक्त रहकर अयोगी होकर मुक्ति प्राप्त हो जाती है।

क्रमशः..........

यात्रा के सैकड़ों साल पुराने प्रमाण

सम्मेद शिखर जी गिरनार जी तीर्थ सदा से हमारे थे, हैं और रहेंगे

– निर्मलकुमार पाटोदी

प्रमाण सहित अत्यंत गर्व करने का प्रासंगिक विषय यह है कि दिगम्बर जैन धर्म, उसकी संस्कृति और तीर्थ भारत में प्राचिनतम हैं।

भारतवर्ष का प्राचिनतम धर्म 'जैन धर्म' है और संस्कृतियों में 'श्रमण संस्कृति' रही है। धर्म की दो धाराऐं हैं – 1. श्रमण, 2. वैदिक। वैदिक युग में आर्हत संस्कृति का प्रसार हमारे देश में भली-भाँति व्याप्त था। आर्हत 'अर्हत्' के उपासक थे। तीर्थंकर पार्श्वनाथ के समय तक जैन धर्म के लिए 'आर्हत' शब्द ही प्रचलित था। जो वैदिक युग के पूर्व में भी प्रचलित था। इस काल में 'पणी' और 'वाल्य' अर्हत धर्म को मानने वाले थे। पणि भारत के 'आदिम' व्यापारी थे। वे समृद्ध थे, ज्ञान में बढ़े-चढ़े थे। आगे चलकर वणिक हो गये, जो बनिये नाम से पहचाने जाते हैं। ये आत्मा को सर्वश्रेष्ठ, सर्वोपरि मानते थे। इनका कहना था ब्रह्म या ईश्वर को मानने की क्या आवश्यक है? अर्हत पद के तीन नाम 'अरहन्त', 'अरिहन्त' और 'अरूहन्त' है। 'अरूहन्त' पद में निहित रकारोन्तरवर्ती उकार उद्वेग स्तम्भनबीज हैं। इन पदों का प्रयोग छटवी-सातवीं शती में हुआ। खारवेल के शिलालेख में तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों की पाण्डुलिपियों में 'अरहंत' पद भी उपलब्ध होता है। ''णमोकार मन्त्र'' के पाठालोचन में 'अरहन्त' पद हैं। अरिहन्त पद 'अरि' शब्द में निहित इकार शक्ति बोधक बीज है। इसका व्यवहार उस शक्ति के लिये किया गया है, जो लौकिक कामनाओं को पूर्ण करने वाली है।

दिगम्बर जैन धर्म प्राचीन है। स्वभाविक है इसके अनुयायी थी उसके उद्भव काल से रहे हैं। श्रमण धर्म संस्कृति के विकास ने तीर्थंकर भगवंतों के आगमन के बाद एक नये काल में प्रवेश किया था। तीर्थंकर भगवान की परंपरा आदि प्रभु ऋषभदेव से महावीर तक चली है। इसी के साथ पंचकल्याणक/प्रतिष्ठााओं व मूर्ति/बिम्ब स्थापना का इतिहास भी कम प्राचीन नहीं है। शास्त्र भण्डार, मूर्ति लेखों, शिलालेखों, प्रशस्तियों, पट्टावलियों, अभिलेखों, हस्तलिखित पाण्डुलिपियों, सिद्धान्त ग्रंथों के साथ ही साथ जीवंत प्राचीन मंदिर आदि आज भी प्रमाण-स्वरूप हमारे समक्ष विद्यमान है।

साधारणतः हम जिस स्थान की यात्रा करने के लिए आते हैं, उस स्थान को तीर्थ कहते हैं। तीर्थ भवसागर से पार उतरने का मार्ग बताने वाला स्थान है। जिस स्थल से तीर्थंकर भगवान का निर्वाण प्राप्त हुआ है, वह सिद्ध क्षेत्र है। ऐसे स्थानों को सौधर्मेन्द्र ने अपने वज्र दण्ड से चिह्नित कर दिया था। उस स्थान पर श्रद्धालु-चरण चिह्न बनवा देते थे। उन स्थानों पर प्राचीनकाल से अब तक चरण-चिह्न बने हुए हैं और आराधक/भक्त इन्हीं चरण-चिह्नों की पूजा-अर्चना करते रहे हैं।

तीर्थो में उच्च शिखर, युक्त आस्था का परम पावन अनादि निधन तीर्थाधिराज श्री सम्मेदशिखरजी (पार्श्वनाथ पर्वत) दिगम्बर जैन धर्म का हमेशा से सिद्धभूमि शाश्वत धर्मतीर्थ है। वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों में से भगवान आदिनाथ/ऋषभदेव, वासुपूज्य नेमिनाथ और महावीर को छोड़कर शेष बीस तीर्थंकर तथा करोड़ों वीतरागी भव्य आत्माओं ने इस पर्वतराज के विभिन्न शिखरों से निर्वाण पद पाया है। भगवान महावीर के गणधर गौतम-स्वामी को भी इसी सिद्धक्षेत्र से मोक्ष पद मिला है। इन सभी के दिगम्बर आम्नाय के चरण-चिह्न श्री सम्मेद शिखर जी पहाड़ पर विराजमान हैं।

दिगम्बर जैनियों में तीर्थयात्रा के लिये चतुर्विध संघ निकालने की परम्परा बहुत पुरानी है। सैकड़ों वर्ष पूर्व में जब आवागमन के साधन और सुविधाएँ बहुत कम थी, तब भी अपना इहलौकिक व परलौकिक जीवन मंगलमय बनाने और कर्मो की निर्जरा के लिए हजारों हजार दिगम्बर जैन श्रद्धालु और यात्री संघ इस महापवित्र सम्मेद शिखर तीर्थराज तथा श्री गिरनार जी पर्वत आदि की वन्दना करते रहे हैं।

निर्वाण भूमि शिखर जी की महिमा का उल्लेख कुछ ऐसे भी हुआ है :-

1. बीसों सिद्ध भूमि जा ऊपर शिखर सम्मेद महागिरि भूपर।
   भाव सहित बन्दे जो कोई ताहि नरक पशु गति नहीं होई ।।

श्री सम्मेद शिखर जी की बड़ी पूजन में कहा गया है :-

2. श्री सम्मेद शिखर सदा, पूजों मन-वच-काय।
   हरत चतुर्गति दुःख को, मन वांछित फल दाय ।।

पं. द्यानतराय जी के अनुसार :-

3. एक बार बन्दे जो कोईद्व ता ही नरक पशु गति नहीं होई।

कहा जाता है इस पर्वतराज की एक बार भी शुद्रभाव से जो वंदना करता है, तो इसके प्रबल प्रताप से वह व्यक्ति अधिक से अधिक 49 भवों में मुक्ति द्वार का अधिकारी हो जाता है। शिखर जी तीर्थ क्षेत्र 38 वर्ग किलोमीटर अर्थात् 16000 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। भूतल से इसका वन्दना पथ 9 किलो मीटर की चढ़ाई, 9 किलो मीटर समतल चरण-चिह्ना शिखर क्षेत्र और 9 किलो मीटर उतार है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 5200 फीट है। परिक्रमां 30 किलो मीटर लम्बी है।

श्री सम्मेद शिखर जी की सैकड़ों वर्ष पहले यात्राएँ :-

1. वीतराग ऊर्जा की अवर्णनीय पावन धरा तीर्थो में पहला तीर्थ श्री सम्मेद शिखर जी का आठ सौ साल पहले संवत 1384 में आत्म कल्याण के लिये चाक्सू (राजस्थान) से

संघपति तीको एवम् उसके परिवार ने वन्दना की थी। उस समय प्रसिद्ध आचार्य प्रभाचन्द्र का पदारोहण आत्मशोधन की इस पावन धरा पर संवत 1571 फागुन सुदी 2 के शुभ दिन हुआ था।

2. संवत 1658 में आमेर के पूर्व महाराजा मानसिंह के प्रधान अमात्य साह नानू गोधा ने यहाँ शिखर जी में दिगम्बर जैन मंदिर बनवाएँ तथा तीर्थंकरों के चरण (चिह्नों का जीर्णोद्धार कर) स्थापित किये और कई बार वंदना की।

3. कई आचार्यों भट्टारक का पदारोहण सम्मेद शिखर जी में हुआ था। वे संवत 1622 से 40 साल तक पट्टस्थ रहे थे।

4. संवत 1719 फागुन सुदी 7 को साह नरहरिदास सुखानंद ने पहाड़ पर पंचकल्याण प्रतिष्ठा करवायी थी।

5. संवत 1632 में सम्मेद शिखर जी पर फिर से प्रतिष्ठा करवा कर महान पुण्य का अर्जन किया था। इस समय सुरेन्द्र कीर्ति विराजमान थे।

6. संवत 1863 की माघ बदी सप्तमीं को जयपुर के दीवान रामचन्द्र छाबड़ा ने अपने विशाल संघ के साथ सम्मेदशिखर जी की प्रथमबार वंदना की थी और वहाँ विकास के कार्य करवाये थे। इनकी यात्रा संघ में पाँच हजार स्त्री-पुरुष थे।

7. भादवा (राजस्थान) के सुखराम रावका (18 वीं शताब्दी) कवि ने संवत 1830 को रवाना होकर संवत 1831 के श्रावण मास के कृष्णपक्ष में यात्रा करके शिखर जी वापस लौटे थे ।

8. विक्रम संवत 1867ए कार्तिक कृष्ण पंचमी बुधवार को मैनपुरी (उ.प्र.) से सम्मेद शिखर यात्रा के लिये एक यात्रा संघ गया था। यहाँ के दिगम्बर जैन धनाढ्य साहू धनसिंह का शुभ भाव में सम्मेद शिखर जी की यात्रा संघ सहित कराने का हुआ था। कहते हैं इस यात्रा संघ में करीब 252 बैलगाड़ियों और 1222 यात्रीगण थे। यात्रा का वृतान्त ''सम्मेद शिखर की यात्रा का समाचार'' नामक हस्त लिखित पुस्तिका में है। यात्रा संघ रास्ते की यात्रा करते हुए माघ बदी 3 को पालगंज पहुँचा था। माघ बदी 5 को संघ मधुबन में ठहरा था। बसंत पंचमी को संघ ने श्री सम्मेद शिखर पर्वत की वंदना की थी। माघ सुदी 15 को मधुबन से वापसी के लिये संघ ने प्रस्थान किया था। बैसाख बदी 12-13 को यात्री संघ वापस मैनपुरी पहुँचा।

यात्राएँ : उर्ज्जयन्त तीर्थ गिरनार जी की -

1. संवत 503 में महणसी बाकलीवाल के पुत्र कोहणसी ने 24 प्रतिष्ठाएँ करवायी थी। बाद में इन्हीं कोहणसी के पुत्र बीजल पुत्र गोसल ने संवत 625 में आचार्य भानचंद जी के सानिध्य में गिरनार तक संघ चलाया।

2. संवत 1245 माह सुदी को भट्टारक नरेन्द्र कीर्ति के समय में हेमू के पौत्र बैरा ने गिरनार तक यात्रा संघ चलवाया।

3. संवत 1709 में नेवटा निवासी तेजसी उदयकरण सम्यग्ज्ञान शक्ति यंत्र की प्रतिष्ठा गिरनार जी में करवा कर जयपुर के पाटोदियान मंदिर में उसे विराजमान किया था।

4. रचना 'जात्रासार' में गिरनार जी एवं तारंगा क्षेत्र की यात्राओं का वर्णन है। यात्रा संवत 1829 के पूर्व की थी।

5. संवत 1858 बैशाख सुदी 10 को संघ दीवान जयपुर के रामचन्द्र छाबड़ा ने पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करायी। रैवतकाचल (गिरनार) की पूरे संघ के साथ यात्रा की।

भारत में दिगम्बर जैन समाज की पाँच राष्ट्रीय संस्थाएँ हैं – 1. दिगम्बर जैन महा समिति, 2. अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद् 3. दक्षिण भारत जैन सभा, 4. भारत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, 5. भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी। इनमें से तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई की ओर से मोक्ष सप्तमी 2012 से 2013 तक श्री सम्मेद शिखर वर्ष मनाने की घोषणा की गयी है। श्रेयस्कर यह होता की घोषणा पाँचों राष्ट्रीय संस्थाओं के द्वारा बनी समन्वय समिति की ओर से होती। विडम्बना यह है कि राष्ट्रीय संस्थाओं की ओर से धर्म के सबसे बड़े तीर्थाधिराज वर्ष मनाने का निर्णय क्यों नहीं लिया गया? शिखर जी पूरे दिगम्बर जैन समाज का है संदेश पूरे समाज की राष्ट्रीय संस्थाओं की ओर से जाना था, जिसमें आव्हान होता कि शिखर जी को लेकर सर्वोच्च न्यायालय में जो प्रकरण विचारधीन है, उसकी जानकारी दी जाती। शिखर जी तीर्थ की रक्षा से जुड़ी आवश्यक जानकारियाँ समाज को व संतगणों को पहुंचाई जाती। सिर्फ पर्यावरण स्वच्छता, शुद्धता ही वहाँ की समस्याएँ नहीं है। फिलहाल में अति आवश्यक घटक यह कि हमारे जैनियों के गिरनार सिद्ध क्षेत्र का हिंसक व्यसनी पण्डों के चंगुल से छुड़ाकर पूर्ण एकता के साथ गिरनार वर्ष मनाया जावे।

संपर्क : विद्यानिलय, 45, शांति निकेतन,
(बाम्बे हॉस्पिटल के पीछे) इन्दौर-452010
मो.नं. 07869917070
ई-मेल : nirmal.patodi@gmail.com

अभूतपूर्व चातुर्मास

चेतन में चिंतन बिखराया, फूल चेतना का बिकसाया ।
खुशबु मजहब की बिखराते, गुरु आर्जवसागर को शीश झुकाते ।।
जिनगुण की नित करें प्रशंसा, जिन वचनों में करें न शंका ।
सम्यक् दर्शन दृढ़ है जिनका, नमन सदा गुरु को हम सबका ।।

देवाधिदेव शांतिनाथ भगवान की असीम अनुकम्पा से मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज के प्रेरणा एवं पावन सानिध्य में, प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्रह्मचारी अनिल भैया, भोपाल के निर्देशन में दिव्य समवशरण महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया इसमें विशाल एवं आकर्षित भव्य समवशरण की रचना की गयी।

समवशरण उद्घाटनकर्ता श्रीमान नरेश भाई जैन, दिल्ली वालों ने किया। ध्वजारोहणकर्ता समाज के अध्यक्ष श्रीमान हर्षदभाई जैन मेहता ने किया। सौधर्म इन्द्र का सौभाग्य प्राप्त किया श्रीमान नरेश भाई रमीला बेन, सूरत, कुबेर बने श्रीमान टीकमचंद मंजु गोधा, भरत चक्रवर्ती श्रीमान बाबूलाल लीना बेन कोठारी, महायज्ञ नायक रसीक भाई रंजन बेन गांधी आदि आदि अनेक इन्द्र-इन्द्राणी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया। रात्रि में रोज महाआरती विशेष आकर्षण का केन्द्र रही इसमें पुण्यार्जक के निवास स्थान से धर्मरथ पर सवार होकर गाजे-बाजे के साथ पाण्डाल तक आते रात्रि के सांस्कृतिक कार्यक्रम में राजस्थान के श्री सुभाष जी द्वारा और महाराष्ट्र से पधारे श्रीमान राजेन्द्र उमरगा ने अद्भुत नाटक पेश किये।

मुनिश्री के सानिध्य में 20 अक्टूबर को विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया यूँ तो कवि सम्मेलन रात्रि में ही होते हैं पर मुनिश्री का प्रभाव ऐसा रहा कि दिन में भी कवि सम्मेलन हुआ मुनिश्री ने भी अपनी भाव भरी प्रेरणास्पद कविताएँ सुनाईं। मंच का संचालन किया कवि श्री चन्द्रसेन जी भोपाल द्वारा और डॉ. नरेन्द्र जैन भोपाल, डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन, श्री पं. लालचन्द्र राकेश भोपाल, अजय अहिंसा जबलपुर, योगीराज फूलचन्द जी छतरपुर आदि अनेक कविवर इस सम्मेलन में उपस्थित थे।

21 अक्टूबर को पाठशाला सम्मेलन हुआ। परम पूज्य मुनिश्री का जहाँ भी चातुर्मास होता है वहाँ एक नई पाठशाला का उद्घाटन होता है इसी श्रृंखला में जगह-जगह से पाठशालायें आयीं थीं प्रोग्राम देने के लिए उन सभी ने सांस्कृतिक धार्मिक प्रोग्राम दिये जिसमें प्रथम स्थान पर जयपुर की पाठशाला यहाँ से करीब 70 बच्चे 10 शिक्षिकायें आयीं थीं। द्वितीय स्थान पर आहुरा नगर सूरत की पाठशाला को मिला और तृतीय स्थान पर रेनवाल (किशनगढ़) पाठशाला को मिला।

26 अक्टूबर से कण्ठपाठ प्रतियोगिता प्रारम्भ हुआ। जिसमें बच्चों के लिए 5 विषय, बड़ों के

लिए छः विषय रखे गये थे। और इस कण्ठपाठ प्रतियोगिता में 4 वर्ष के बच्चों से लेकर 60-70 वर्ष की उम्र वाले वृद्ध लोगों ने तक भाग लिया करीब सभी मिलाकर 116 लोगों ने भाग लिया था। यह भी एक आम्नाय नाम का स्वाध्याय है।

13 नवम्बर को दीपावली के शुभ अवसर पर भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक पूजन, आरती करते हुए हर्षोल्लास के साथ लाडू चढ़ाने के साथ वर्षायोग का निष्ठापन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ और शाम को लोगों ने अपने गृहों में गणधर की पूजन के साथ दीपक जलाकर शुभमय दीपावली मनायी। बच्चों को पटाखे न फोड़ने का संकल्प दिया गया।

25 नवम्बर को पिच्छी परिवर्तन (संयम दिवस) हुआ। संयम धारण किये बिना कर्मों का क्षय नहीं किया जा सकता है। वर्षायोग समाप्ति पर संयम का उपकरण पिच्छी परिवर्तन का भव्य कार्यक्रम महत्वपूर्ण रहता है। इसमें त्रिशलादेवी महिला मण्डल आहुरा नगर द्वारा भजनों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम के रूप में तथा आचार्य श्री विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला के विद्यार्थियों द्वारा मंगलाचरण पूर्वक पिच्छिका परिवर्तन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। इसमें नई पिच्छी मुनिश्री को देने का सौभाग्य प्राप्त किया श्री डी.आर. जैन जयपुर, श्रीमान नरेशभाई दिल्ली वाले, टीकमचंद गोधा सूरत और भूपेन्द्र भाई महेता सूरत इन्होंने अपने जीवन में कुछ संयम धारणकर मुनिश्री को नई पिच्छी भेंट की। मुनिश्री की पुरानी पिच्छी लेने का सौभाग्य प्राप्त किया नरेन्द्र भाई-अरुणा बेन महेता ने, इन्होंने मुनिश्री से अणुव्रत ग्रहण कर अपने जीवन में संयम धारण किया। दूसरी पिच्छिका देने का सौभाग्य शैलेश भाई महेता को एवं लेने का सौभाग्य रमेश भाई दोशी को प्राप्त हुआ। इसी दिन कण्ठपाठ प्रतियोगिता के इनाम वितरण (गोल्ड मेडल रूप से) किये गये।

28 नवम्बर को मानस्तम्भ महामस्तकाभिषेक हुआ। परम पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर महाराज के सानिध्य में विशाल मानस्तम्भ में स्थित प्रतिमाओं का अभिषेक कराने का सौभाग्य आहुरा नगर समाज को मिला। इन प्रतिमाओं का सूरी मंत्र भी 2004 में मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ने ही भोपाल में दिया था पंचकल्याणक के अंतर्गत। महामस्तकाभिषेक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। फिर 8 विशेष मूर्तियों के अभिषेक के लिये बोली लगाई गयी। बाकी कलशों की रु. 11 हजार, रु. 5 हजार, रू. 1100 के कलश वितरित किये गये अडाजन क्षेत्र का कोई भी घर बाकी नहीं रहा जिसने कलश न लिया गया हो। सभी ने महामस्ताभिषेक कर अपूर्व आनन्द की प्राप्ति की।

30 नवम्बर को मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज के सानिध्य में आचार्य विद्यासागरजी महाराज का 41 वाँ आचार्य पदारोहण मंदिर जी के प्रांगण के पाण्डाल में बड़े ही श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इसी अवसर पर आचार्य श्री के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया तत्पश्चात् आचार्य श्री का पूजन की गई तत्पश्चात् मुनिश्री ने अपने सार गर्भित प्रवचन में आचार्य श्री के अनछुये पहलुओं पर

प्रकाश डाला। समाज के व्यक्तियों ने भी आचार्यश्री के संस्मरण सुनाकर अपनी गुरु भक्ति प्रकट की। अंत में आचार्य श्री की आरती रत्नत्रय दीप जलाकर की गई।

अभूतपूर्व ऐतिहासिक चातुर्मास के बाद मुनिश्री का मंगल बिहार दिसम्बर एक तारीख को अपरान्ह 4 बजे नानपुरा के लिये हो गया विहार के अवसर पर सभी भक्तजनों की आखों में अश्रु थे पर मुनिश्री तो आचार्यश्री की तरह ही निर्लिप्त हो मंगल विहार कर गये। प्रवचन व आहारचर्या के साथ नानपुरा में एक दिन, भट्टार में 8 दिन एवं पार्ले पाइन्ट में 9 दिन और गोपीपुरा में 1 दिन देकर व नवापुरा में भी प्रवचन देकर पर्वतपाटिया (माडलटाउन) की ओर विहार किया जहाँ अपने प्रभावक प्रवचनों से एवं चर्या से मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज ससंघ से बड़ी प्रभावना हुई। मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज द्वारा पर्वतपाटिया में भी आचार्य विद्यासागर सर्वोदय ज्ञान पाठशाला की भी स्थापना हुई।

आहुरानगर में कई कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किये गये। पाठशाला के 150-200 बच्चों को जो मुनिश्री ने संस्कार दिये हैं वह जरूर धर्म के प्रेरक बने रहेंगे प्रत्येक दिवस मुनिश्री के प्रवचन का लाभ मिला प्रत्येक दिन त्योहार सा प्रतीत होता था वर्षायोग का।

वर्षायोग के दौरान सम्पूर्ण देश से भक्तजन मुनिश्री के दर्शन को आते थे। मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडू के भक्तों ने लोगों को बहुत प्रभावित किया।

वैसे तो सूरत शहर में अनेकों मुनिराजों के चातुर्मास कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ किन्तु पूज्य मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का चातुर्मास अपूर्व प्रभावना के साथ सम्पन्न हुआ। वह चिर स्मरणीय रहेगा। चातुर्मास की सफलता में समाज के सभी लोगों का सहयोग रहा फिर भी वर्षायोग समिति के प्रमुख कार्यकर्ता हर्षदभाई महेता, अरविन्द भाई गांधी, कनुभाई महेता वर्षायोग समिति के विभिन्न कार्यकर्ता एवं महिला मंडल एवं समाज के प्रत्येक व्यक्ति बच्चे से बूढ़े तक सभी का सहयोग बना रहा। समाज के सभी सदस्यों के प्रति अभार प्रकट करते हैं जिन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर पुण्य संचय किया।

नमन गुरुदेव को जिनने हमें आकर जगाया है ।
नमन गुरुदेव को जिनसे मिली सद्ज्ञान छाया है।।
नमन श्री आर्जवसागर को हमारे जो परमात्मा भी हैं।
नमन गुरुदेव को जिनसे धर्म का जीवन सुपाया है ।।

अन्त में पूज्य मुनिश्री की यह धर्मप्रभावना निर्बाध चलती रहे इसी भावना के साथ बारम्बार नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

अध्यक्ष : दि. जैन महासमिति, सूरत
श्रीमती मंजू टीकमचंद गोधा, सूरत

जैनियों के प्रति हो रहे अत्याचार को दूर करें

1. दिन में एक बार भोजन करने वाले, नंगे पैर विहारकर प्रकृति में जीने वाले दिगम्बर जैन मुनियों के प्रति जो गिरनार पर्वत पर दुर्व्यवहार हुआ है उससे पूरे भारत देश के कोने-कोने में रहने वाले जैनियों की और अन्य समाज की भी जनता को भारी दुःख का अनुभव हुआ है।
2. श्वेताम्बर जैन साधुओं के साथ एक्सीडेंट में जो दुर्घटनाएँ हुई हैं उससे भी सम्पूर्ण देश के जैन जैनेतर समाज को बड़ा आघात पहुँचा है।
3 गिरनार पर्वत पाँचवी व तीसरी पर इससे पूर्व भी कई बार जैन साधुओं व साध्वियों तथा श्रावकों पर पण्डों द्वारा डण्डे आदि के प्रहार किये गये हैं। तथा दर्शन, पूजनादि में व्यवधान किया गया है।
4. पूजक तो अहिंसक व दयालु होते हैं लेकिन वहाँ हिंसक अपराधी पण्डों को क्यों जगह दी गयी है? जो अनैतिक हैं।
5. गिरनार की पांचवी व तीसरी टोंक पर सेन्ट्रल से पुलिस व्यवस्था की जावे होमगार्ड को हटाया जावे, पुलिस पण्डों के यहाँ भोजन न करें।
6. गिरनार की पांचवी या तीसरी आदि टोंको पर अस्त्र-शस्त्र के साथ पण्डों आदि को अधिकार ना दिया जावे। केवल यह अधिकार पुलिस को ही हो।
7. जिन असामाजिक तत्त्वों ने मुनि पर अत्याचार किया है उन्हें न्योचित दण्ड देकर गिरनार (जूनागढ़) से दूर रखा जाये।
8. यात्रियों के साथ हमेशा दूसरी टोंक से आगे तीसरी व पांचवी टोंक तक पुलिस की व्यवस्था दी जावे।
9. गिरनार की पांचवी टोंक के चरणों व चट्टान में बनी मूर्ति को खुला रखा जावे क्योंकि चरणों को नेपकीन व फूलों से ढांक दिया जाता है व मूर्ति को तत्काल में सीमेन्ट से ढक दिया है।
10. जिसकी जो पूजा पद्धति है उसे उस पूजा पद्धति से पूजन का अधिकार दिया जावे।
11. एक जैन पुजारी भी गिरनार की पांचवी टोंक पर रखा जाये।
12. पुरातत्त्व धरोहर से नजदीक नया निर्माण कार्य वर्जित है तो गिरनार की पांचवी टोंक पर जो नई मूर्ती रखी है तथा पांचवी और दूसरी टोंक के पास जो नया द्वार आदि बनाया जा रहा है उसे हटाया जाय।
13. गिरनार पर्वत सम्बन्धी चल रहे पूर्व मुकदमें का निर्णय शीघ्र घोषित किया जावें क्योंकि जब तक उपर्युक्त कार्य पूर्ण ना होगें तब तक सम्पूर्ण देश की जैन समाज त्याग व अनशन में संलग्न रहेगी तथा आपत्ति दूरकर्त्ता को ही अपना अभिमत दे सकेगी अथवा ऐसे व्यक्तियों को धर्म द्रोहि व सांप्रादायिक पक्षवादी मानकर जनता मुख मोड़ लेगी।

माननीय श्री नरेन्द्रभाई मोदी
मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य,
गांधी नगर

गिरनार पर्वत पर असामाजिक तत्त्वों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाई की जाएं।

समस्त जैन मसाज की मांग ।

- प्राणी मात्र के प्रति करुणा व अहिंसा का भाव रखने वाले शान्तिप्रिय जैन मुनि नंगे पांव पद यात्रा कर जन-जन को नैतिकता व अध्यात्मिकता का सन्देश देते हैं, दिन में एक बार भोजन और पानी ग्रहण कर प्रकृति में जीने वाले जैन मुनिजनों के प्रति पिछले कुछ समय से षड्यंत्र पूर्वक दुर्व्यवहार हो रहा है।
- गिरनारजी तीर्थ जो कि जैनों के आराध्य भगवान नेमिनाथ जी की पवित्र मोक्ष भूमि है, यह तीर्थ जैनों के श्रद्धा व आस्था का प्रतीक है, लेकिन कुछ असामाजिक तत्त्व जैनियों को दर्शन आदि करने नहीं देते व उनके साथ मारपीट तक कर बैठते हैं।
- गत दिनों गुजरात के जूनागढ़ स्थित गिरनार पर्वत पर दिगम्बर जैन मुनिश्री प्रबलसागर जी पर कुछ असामाजिक तत्त्वों ने जानलेवा हमला कर उन्हें बूरी तरह घायल कर दिया था, इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना से देश भर के जैन समाज में गहरा रोष व्याप्त है, और देशभर में इस घटना के विरोध में धरना, प्रदर्शन, रेलियां आदि आयोजित हो रहे हैं।
- गिरनार पर्वत पर एक दृष्टि से असामाजिक तत्त्वों का ही साम्राज्य है, वहा पर स्थाई अड्डा बनाए बैठे ये समाज-कण्टक, जैन श्रद्धालुओं के साथ-साथ जैन साधु साध्वियों पर भी हमला करने से नहीं चूकते हैं।
- गिरनार पर्वत को अपनी जागीर समझने वाले कुछ पण्डे अपनी सोची समझी साजिश के तहत जैन धर्मावलम्बियों को न बल्कि अपने आराध्य की पूज्य-अर्चना करने से रोकते हैं अपितु उन्हें जान से मारने की धमकी देकर वहाँ से भाग जाने के लिए बाध्य कर देते हैं। ऐसे तत्त्वों को गिरनार (जूनागढ़) से अविलम्ब दूर हटाया जाए, ताकि सभी धर्म प्रेमी शान्ति से दर्शन-पूजा आदि कर सकें।
- गिरनार की तीसरी व पांचवी टोंक पर जबरन अड्डा जमाए बैठे पण्डे अस्त्र-शस्त्र से लेस मिलते हैं वहां तेनात होमगार्ड स्वयं इन पण्डों के चंगुल में फंसे हुए हैं अतः वहां से शीघ्र से शीघ्र पुलिस बल तैनात किया जाए। पुलिस भी पण्डों से दूरी बनाएं रखें।

- गिरनार पर स्थित पांचवी टोंक के चरणों व चट्टान में बनी मूर्ति को नेपकिन व फूलों से ढंक दिया गया है, उसे सभी धर्मप्रेमी लोगों के लिए खुला रखा जाए तथा जिसकी जो पूजा पद्धति है, उसे उस पूजा पद्धति से पूजन का अधिकार दिया जाए व पांचवी टोंक पर भी पुजारी को सुरक्षा व सलामति पूर्वक रहने की अनुमति दी जाये।
- पुरातत्व धरोहर के आसपास नये निर्माझा कार्य पर अदालत की पूरी तरह रोक लगी हुई है उसके बावजूद वहां निर्माण कार्य बे रोक-टोक जारी है, ताज्जुब की बात तो यह है की प्रशासन इसे अवैध निर्माण कार्य को मौन स्वीकृति प्रदान कर रहा है, हमारी मांग है कि जो अनुचित निर्माण कराया गया है उसे अविलम्ब हटाया जाये।
- गिरनार-तीर्थ पर अपना अड्डा बनाये बैठे पण्डे धर्म प्रेमियों से दर्शन-पूजा आदि कराने हेतु हट-पूर्वक व जबरन पैसे वसूलते हैं जो कि हर दृष्टि से अनुचित व अवैध है, ये पण्डे पैसे न देने पर यात्रियों से लड़ते-झगड़ते है व दर्शन पूजा आदि करने से उन्हें रोक देते हैं।
- दूसरी टोंक से आगे तीसरी व पांचवी टोंक तक यात्रियों की सुरक्षा हेतु पुलिस बल तैनात किया जाये।
- अदालत में लम्बित मसलों का निपटारा भी शीघ्र से शीघ्र हो इसके लिये फास्ट ट्रेक अदालत की व्यवस्था की जाये।
- गिरनार पर्वत पर जगह-जगह सुरक्षा हेतु सी.सी.टी.बी. केमेरे लगाए जायें ताकि असामाजिक तत्त्वों द्वारा की जा रही गुण्डागर्दी व दादागिरी की हरकते रिकार्ड की जा सकें।
- गिरनार की घटना के संदर्भ में गिरफ्तार किये गए असामाजिक तत्त्व ने मुनिश्री पर हमला करने से पूर्व उन्हें जान से मारने की धमकी भी दी थी। ऐसे तत्त्व के खिलाफ सख्त से सख्त धारा के तहत मुकदमा चलाया जाये।

समस्त जैन समाज, सूरत

प्रति,

राज्यपाल श्री गुजरात राज्य,
माननीय गृह मंत्री श्री
माननीय जिलाधीश महोदय (सूरत)
माननीय जिलाधीश महोदय (जुनागढ़)
डी.आई.जी. पुलिस, गुजरात प्रदेश

कृपया यहाँ से निकालें

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक 100

❉ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।

❉ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।

❉ उत्तर राष्ट्र भाषा हिन्दी में ही लिखें, लिखकर काटे या मिटाये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

सही उत्तर पर [✔] सही का निशान लगावें -

प्र.1 गुरुवर आर्जवसागर जी के दशलक्षण के प्रवचन संग्रह कृति का नाम क्या है?
धर्मभावना शतक [ ] परमार्थ साधना [ ] पर्यूषण पीयूष [ ]

प्र.2 विद्याधर (वर्तमान में आ. विद्यासागर जी) के जन्म गाँव में मुनिश्री आर्जवसागरजी मुनिश्री नियमसागर जी आदि मुनियों के सानिध्य में कब पञ्चकल्याणक हुआ था?
सन् 2002 में [ ], सन् 2003 में [ ], सन् 2001 में [ ]

प्र.3 श्रवणबेलगोला में 1993 के चातुर्मास में आ. विद्यासागर जी के संघस्थ मुनिश्री आर्जवसागर जी के साथ इसी संघ के और कितने मुनि साथ में थे?
5 मुनि [ ], 8 मुनि [ ], 4 मुनि [ ] 2 मुनि [ ]

प्र.4 बालक पारसचन्द का जन्म किस समय हुआ था ?
सुबह 4 बजे [ ], शाम को 4 बजे [ ], सुबह 10 बजे [ ]

हाँ या ना में उत्तर दीजिये -

प्र.5 मुनिश्री आर्जवसागर जी ने सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर जी की 16 वंदनायें की थी [ ]

प्र.6 तीर्थोदय काव्य में मुनिश्री आर्जवसागर जी ने प्रतिमा की भूमिका का वर्णन 19 पद्यों में किया है। [ ]

प्र.7 जैनागम संस्कार में 20 वाँ अध्याय सम्यग्दर्शन पर लिखा है। [ ]

प्र.8 मुनिश्री आर्जवसागर जी ने 18 वर्षों तक लगातर श्रावक साधना संस्कार शिविर करवाया। [ ]

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

प्र.9 अलवर नगरी में जो प्रवचन हुये थे उनका संकलन................. नाम की कृति बनी।
[आर्जव वाणी, आर्जव कविता, आर्जव वाणी सार]

प्र.10 भक्ति में नियम-संयम जरूरी यह मुनिश्री आर्जवसागर जी का उद्बोधन भाव विज्ञान के .... अंक में प्रकाशित है।
[20 अंक, 18 अंक, 19 अंक]

प्र.11 मुनिश्री आर्जवसागर जी के सानिध्य में तमिलनाडु में .... पंचकल्याणक हुये हैं।
[7, 10, 9]

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिये –

प्र.12 गुरुवर आर्जवसागर जी के द्वारा 25 विशेषयुत हुए कार्यों में से 3 कार्यों के नाम लिखिए।

....

....

सही जोड़ी मिलायें :–

प्र.13 चम्पापुरी दर्शन	–	सन् 2011 में
प्र.14 हस्तिनापुर दर्शन	–	सन् 2007 में
प्र.15 चाँदखेड़ी दर्शन	–	सन् 2012 में
प्र.16 कीर्ति स्तम्भ दर्शन	–	सन् 2010 में

सही (✔) या (✕) गलत का चिन्ह बनाइये :–

प्र.17 तीर्थोदय काव्य रचना के समय मुनिश्री आर्जवसागर जी ने एक आहार एक उपवास किया था । [ ]

प्र.18 भोपाल के चातुर्मास में वहाँ के मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर मुनिश्री आर्जवसागर जी के दर्शन के लिये आये थे। [ ]

प्र.19 भाव विज्ञान पत्रिका का पहली बार विमोचन मुनिश्री आर्जवसागर जी के सान्निध्य[ ] में राँची में हुआ था । [ ]

प्र.20 गुरुवर आर्जवसागर जी ने रत्नमयी प्रतिमाओं का पञ्चकल्याणक जयपुर नगर में किया था । [ ]

प्रतियोगी–परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।

डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**
प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कार: 72 योग्य संख्यक मूल्य
तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचनविला, कृष्ण विहार, वी.के. कौल नगर, अजमेर (राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

प्रथम श्रेणी
श्री हरीश चंद छाबड़ा
63/25, हीरापथ, मानसरोवर
जयपुर

द्वितीय श्रेणी
श्रीमती विमला ठोरा
विमल निवास, कृष्णा मिल कालोनी
रामगंज मण्डी

तृतीय श्रेणी
श्री विनीत जैन
द्वारा श्री नाथूलाल जैन,
225/23, बाजा बाली गली
केसरगंज, अजमेर

उत्तर पुस्तिका - जून 2012

1. कुण्डलपुर के बड़ेबाबा 2. सम्मेदशिखर जी
3. मढ़िया जी (जबलपुर) 4. सेवादल का अध्यक्ष
5. ना 6. हाँ 7. हाँ
8. हाँ 9. नेक जीवन
10. मोक्ष पथ में आगे बढ़ने का
11. 1984
12. रत्नकरण्डक श्रावकाचार, सर्वार्थसिद्धि, पञ्चास्तिकाय, समयसार, मूलाचार और ज्ञानार्णव।
13. तमिलनाडु प्रवेश 14. मुनि दीक्षा 15. क्षुल्लक दीक्षा
16. ऐलक दीक्षा 17. सही 18. गलत
19. सही 20. सही

भाव विज्ञान परिवार

✳✳✳✳✳ शिरोमणी संरक्षक ✳✳✳✳✳

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

✳✳✳✳ परम संरक्षक ✳✳✳✳

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✳✳✳ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✳✳✳

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर
● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँता रामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल, रमेशचंद, नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, रामगंजमण्डी
● श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा, रामगंजमंडी

✳✳ पुण्यार्जक संरक्षक ✳✳

● श्री जैन नीरज S/o श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची
● सुशील कुमार, अभिषेक कुमार, रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✳ सम्मानीय संरक्षक ✳

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● कु. इन्द्रसेना जैन, जयपुर ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● श्री जैन कमलजी काला, जयपुर ● श्री जैन अरुणकाला 'मटरू', जयपुर ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्री नरेश जैन, सूरत (दिल्ली वाले) ● श्री निलेश भाई शाह, सूरत (इन्दौर)

✳ संरक्षक ✳

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), जयपुर ● श्री जैन गुणसागर ठोलिया, किशनगढ़-रेनवाल, जयपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● श्री विजयपाल जैन, भोलानाथ नगर, शाहदरा (दिल्ली) ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, जयपुर ● श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, जयपुर ● श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, जयपुर ● श्री जैन ओम कासलीवाल, जयपुर ● श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, जयपुर ● श्री राकेश जैन, रोहिणी, दिल्ली ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री विजय कुमार जैन, छाबड़ा, जयपुर ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री प्रकाशचंद जैन, उदयपुर ● श्रीमती निधी राहुल जैन, उदयपुर, अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज ● श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा, उदयपुर ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन

✳ विशेष सदस्य ✳

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद, अजमेर ● सूरत : श्री जैन हर्षद भाई मेहता ● श्री जैन अरविंद भाई गांधी ● श्री जैन संयम संदीप भाई शाह ● श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी ● श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल ● श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता ● श्री जैन कमलेश शाह ● श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह ● श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी ● श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी ● श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान ● श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास ● श्रीमती गुणमाला देवी दीपचंद सेठी

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

दमोह

श्री यू.सी. जैन, एलआईसी
श्री जिनेन्द्र जैन उस्ताद
श्री नरेन्द्र जैन सतलू
श्री संजय जैन, पथरिया
श्री अभय कुमार जैन गुड्डे, पथरिया
श्री निर्मल जैन इटोरिया
श्री राजेश जैन हिनोती
श्री राजेश गोकुलप्रसाद जैन

कोपरगाँव

श्री जैन चंदूलाल दीपचंद काले
श्री जैन पूनमचंद चंपालाल ठोले
श्री जैन अशोक चंपालाल ठोले
श्री जैन नितिन मदनलाल कासलीवाल
श्री जैन चंपालाल दीपचंद ठोले
श्री जैन अशोक केशरचंद पापड़ीवाल
श्री जैन सुभाष भाऊलाल गंगवाल
श्री जैन तेजपाल कस्तूरचंद गंगवाल
श्री जैन सुनील गुलाबचंद कासलीवाल
श्री जैन श्रीपाल खुशालचंद पहाड़े
श्री जैन शिखरचंद अशोक कुमार लोहाड़े

छतरपुर

श्री जैन प्रेमचंद कुपीवाले
श्री चतुर्भुज जैन, सब इंजीनियर
श्री जैन रतनचंद देवेन्द्र कुमार बस वाले
श्री जैन कमल कुमार जतारावाले
श्री भागचन्द जैन, ललपुरावाले
श्री जैन देवेन्द्र ड्योढ़िया
अध्यक्ष,चेलना महिला मंडल, डेरा पहाड़ी
अध्यक्ष, मरुदेवी महिला मंडल शहर
पंडित श्री नेमीचंद जैन
डॉ. जैन सुरेश बजाज
श्री प्रसन्न जैन ''बन्टू''

टीकमगढ़

श्री विनय कुमार जैन
श्री सिंघई कमलेश कुमार जैन
श्री संतोष कुमार जैन, बड़माड़ई
श्री अनुज कुमार जैन
श्री सी.बी. जैन, मजना वाले
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन, रामगढ़
श्री जैन राजीव बुखारिया
श्री सुनील जैन, मालपीठा वाले
श्री विमल कुमार जैन,मालपीठा
श्री सोनलकुमार संतोषकुमार जैन, खिरियावाले

सीधी

श्री सुनील कुमार जैन, सीधी

ग्वालियर

श्रीमती ओमा जैन
श्रीमती केशरदेवी जैन
श्रीमती शकुन्तला जैन
श्री दिनेश चंद जैन
श्रीमती सुषमा जैन
श्री ब्र. विनोद जैन (दीदी)
श्रीमती सुप्रभा जैन
श्रीमती प्रमिला जैन
श्रीमती मिथलेश जैन
स.सि. श्री अशोक कुमार जैन
श्रीमती मीना जैन
श्रीमती पन्नी जैन, मोहना
श्रीमती मीना चौधरी
श्री निर्मल कुमार चौधरी
श्री कल्याणमल जैन
श्रीमती सूरजदेवी जैन
श्रीमती उर्मिला जैन
श्रीमती विमला देवी जैन
श्रीमती विमला जैन
श्रीमती मोती जैन
श्रीमती अल्पना जैन
श्रीमती रोली जैन
श्रीमती ममता जैन
श्रीमती नीती चौधरी
श्रीमती आभा जैन
श्रीमती सुशीला जैन
श्रीमती पुष्पा जैन
श्रीमती अंगूरी जैन
श्री जैन ओ.पी. सिंघई
श्रीमती जैन मंजू एवं शशी चांदोरिया
श्री सुभाष जैन
श्री खेमचंद जैन
श्री बसंत जैन

असम/गुवाहाटी

वर्धमान इंग्लिश अकादमी, तिनसुखिया
श्री नाथूलाल जैन, नलबारी
श्रीमती जैन इंदिरा छाबड़ा, कामरूप
श्रीमती रेखा विनोद जैन, कामरूप
श्रीमती अमरावदेबी जैन सरावगी, रायगंज
श्रीमती जैन सीमा राजेश काला, धुबड़ी
सुश्री जैन बबीता पहाड़िया, कामरूप

जबलपुर

श्रीमती सितारादेवी जैन
श्री जरत कुमार जैन, डिस्ट्रिक्ट जज

अशोक नगर

श्री प्रमोद कुमार पुनीत कुमार जैन

भिण्ड

श्री सुरेशचंद्र जैन
श्री महेशचंद जैन पहाड़िया
श्री विजय जैन, रेडीमेड वाले
श्री संजीव जैन 'बल्लू'
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्रीमती मीरा ध.प. श्री सुमत चंद जैन

जयपुर

श्री राजेश जैन (गंगवाल)
श्री रिखब कुमार जैन
श्री बाबूलाल जैन
श्री जैन कैलाशचंद जी मुकेश छाबड़ा
श्री जैन पदम पाटनी
श्री जैन राजीव काला
श्री सुनील कुमार राजेश कुमार जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री धन कुमार जैन
श्री सतीश जैन
श्री अनिल जैन (पोत्याका)
श्रीमती जैन शीला ड्योड़िया
श्रीमती जैन शांतिदेवी सोध्या
श्री जैन हरकचंद लुहाड़िया
श्रीमती जैन शांतिदेवी बख्शी
श्रीमती जैन साधना गोदिका
श्री जैन राजकुमार लुहाड़िया
श्री दिनेश कुमार जैन
श्री विमल चन्द जैन
श्री जैन प्रेमचंद काला
श्री उम्मेदमल जैन
श्री उत्तमचंद जैन
श्री पदम कुमार जैन
श्री जैन भविष्य गोधा
श्री बृजमोहन जैन
श्री जैन प्रेमचंद जी बैनाड़ा
श्री जैन महावीर जी सोगानी
श्री जैन संजय सोगानी
श्री जैन अरूण कुमार सेठी
श्री जैन विनोद पांडया
श्री जैन वीरेन्द्र कुमार पांडया
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री कौशल किशोर जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री ओम प्रकाश जैन
श्री रिषभ कुमार जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती जैन सुशीला सोगानी
श्रीमती शीला जैन
श्रीमती बीना जैन
श्रीमती जैन उन्नति पाटनी
श्रीमती जैन सुनीता कासलीवाल
श्रीमती जैन अनीता वैद्य
श्रीमती जैन पदमा लुहाड़िया
श्रीमती जैन सुनीता काला
श्री जैन प्रमोद काला
श्रीमती जैन निर्मला काला
श्रीमती मधुबाला जैन
श्रीमती हीरामणि जैन
सुश्री जैन साक्षी सोनी
श्री जैन महावीर कुमार कासलीवाल
श्री अनंत जैन
श्री रामजीलाल जैन
डॉ. पी.के. जैन
डॉ. डी. आर. जैन
श्री दिलीप जैन
श्री जैन टीकमचंद बाकलीवाल
श्री जैन हरीशचंद छाबड़ा
श्री विमल कुमार जैन गंगवाल
श्री जैन पुष्पा सोगानी
श्री जैन राजकुमार पाटनी
श्री श्रीपाल जैन
श्रीमती जैन पूनम गिरिन्द्र तिलक
श्री जैन पारस सोगानी
श्रीमती जैन अरुणा अमोलक काला
श्री जैन कपूरचंद जी लुहाड़िया
श्रीमती जैन इंद्रा मनीष बज
श्री जैन नरेन्द्र अजमेरा
श्री लाडूलाल जैन
श्रीमती जैन रानीदेवी सुरेशचंद मौसा

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्रीमती जैन आशा सुरेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्रीमती जैन आशा रानी सुरेश कुमार लोहाड़िया
श्रीमती जैन बीना विमलकुमार पाटनी
श्रीमती जैन राखी आशीष सोगानी
श्रीमती जैन चंद्रलेखा महावीरप्रसाद शाह
श्रीमती जैन प्रमिला रूपचंद गोदिका
श्रीमती प्रतिभा प्रसन्न कुमार जैन
श्रीमती जैन शांति देवी पांड्या
श्री हेमन्त कुमार जैन शाह
श्री धर्मचंद जैन
श्री जैन मुरालीलाल गुप्ता
श्री पारसचंद जैन कासलीवाल कुम्हेर
श्री जैन निर्मल कुमार पाटनी
श्री जैन मनीष कुमार गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री जैन हरकचंद छाबड़ा
श्री कुन्थीलाल जैन
श्री गोपाललाल जैन बड़जात्या
श्री महेन्द्र कुमार जैन साह
श्री जैन सुरेन्द्र पाटनी
श्री सी.एल. जैन
श्री जैन प्रदीप पाटनी
श्री लल्लू लाल जैन
डॉ. जैन विनीत साहुला
श्री उत्तम चंद जैन
श्री मनोज जैन
श्री ज्ञानचंद जैन
श्री सुरेश चंद जैन
डॉ. श्रीमती चिमन जैन
श्रीमती जैन प्रेम सेठी
श्रीमती नीता जैन
श्री सुरेशचन्द जैन
श्री राजेन्द्र जैन अग्रवाल
श्री हरीश कुमार जैन बाकलीवाल
श्री हंसराज जैन
श्रीमती अमिता प्रमोद जैन
श्री जैन रीतेश बज
श्री जैन अनिल कुमार बोहरा
श्री जैन नवीनकुमार छाबड़ा
श्री कमलचंद जैन बाकलीवाल (अंधिका)
श्री जैन महेन्द्र प्रकाश काला
श्री जैन बाबूलाल सेठी
श्री जैन प्रेमचंद छाबड़ा
श्री प्रदीप जैन बोहरा
डॉ. राजकुमार जैन
श्री जैन अरुण शाह
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री प्रकाशचंद जैन काला
श्री प्रकाशचंद जैन बड़जात्या
श्री जैन कैलाश फूलचंद पांड्या
डॉ. जैन विजय काला
श्री सम्पतलाल जैन
श्री जैन जीवन्धर कुमार सेठी
श्री जैन सुशील कुमार काला
श्री धर्मचंद रतनलाल जैन
श्रीमती ज्योत्सना पंकज जैन दोषी
श्री अमित अंधिका जैन

मदनगंज-किशनगढ़

श्री स्वरूप जैन बज (जैन)
श्री जैन नवरतन दगड़ा
श्री सुरेश कुमार जैन (छाबड़ा)
श्री जैन प्रकाशचंद गंगवाल
श्री ताराचंद जैन कासलीवाल
श्री जैन पदमचंद सोनी
श्री जैन भागचंद जी दोशी
श्री धर्मचंद जैन (पहाड़िया)
श्री जैन प्रकाशचंद पहाड़िया
श्री जैन भागचंद जी अजमेरा

किशनगढ़-रेनवाल

श्री जैन केवलचंद ठोलिया
श्री निर्मलकुमार जैन
श्री जैन महावीर प्रसाद गंगवाल
श्री नरेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद छाबड़ा जैन
श्री जैन भंवरलाल बिनाक्या
श्री जैन धर्मचंद पाटनी
सुश्री निहारिका जैन विनायका
श्रीमती जैन मधु बिलाला
श्री पवन कुमार जैन बाकलीवाल
श्री राहुल जैन
श्री जैन राकेश कुमार रांवका
श्री बिरदीचंद जैन सोगानी
श्री जैन धर्मचंद अमित कुमार ठोलिया
श्री जैन भागचंद अजमेरा

दौसा

श्री मनीष जैन लुहाड़िया

जोबनेर

श्री जैन महावीर प्रसाद
श्री भागचंद बड़जात्या जैन
श्री जैन भागचंद गंगवाल
श्री जितेन्द्र कुमार जैन
श्री जैन संजय कुमार काला
श्री रमेश कुमार जैन बड़जात्या
श्री दीपक कुमार जैन शास्त्री
श्री रमेश कुमार जैन शास्त्री
श्री निलेश कुमार जैन
श्री जैन महेन्द्र कुमार पाटनी
श्री पदमचंद बड़जात्या जैन
श्री प्रेमचंद ठोलिया जैन
श्री जैन शांतिकुमार बड़जात्या
श्री ताराचंद जैन (कामदार)
श्री मूलचंद जैन
श्रीमती सुनिता दिनेश कुमार बड़जात्या

इन्दौर

श्री आई.सी. जैन
श्री संदीप प्रेमचंद जैन

लखनऊ

स्व. डॉ. पी.सी. जैन

चैन्नई

श्री डी. भूपालन जैन
श्री सी. सेल्वीराज जैन
श्री ताराचंद जैन

नागौर

श्री जैन प्रकाशचंद पहाड़िया, डेह

नसीराबाद

श्री जैन महावीर प्रसाद चंद्रप्रकाश सेठी
श्री जैन ताराचंद पाटनी
श्री जैन शान्तिलाल पाटनी
श्री जैन शान्तिलाल गोधा
श्री जैन शान्तिलाल जैन सोगानी
श्री जैन सुशील कुमार गदिया
एडवोकेट अशोक कुमार जैन
श्री टीकमचंद भागचंद जैन
श्री जैन ताराचंद पारसचंद सेठी
श्री जैन महावीर प्रसाद राजकुमार गदिया
श्री प्रकाश चंद जैन

अजमेर

श्री जैन महावीर प्रसाद काला
श्रीमती सविता जैन, वीरगांव
श्रीमती जैन स्नेहलता प्रेमचंद पाटनी
श्री जैन रूपचंद छाबड़ा
श्री जैन सुरेशचंद पाटनी
श्रीमती जैन चंद्रा पदमचंद सेठी
श्री जैन चंद्रप्रकाश बड़जात्या
श्री भागचंद निर्मल कुमार जैन
श्री जैन निर्मलचंद जी सोनी
श्री नरेन्द्र कुमार प्रवीण कुमार जैन
श्रीमती सरोज डॉ. ताराचंद जैन
श्रीमती आशा तिलोकचंद बाकलीवाल
श्री जैन नवरतनमल पाटनी
डॉ. रतनस्वरूप जैन
श्रीमती जैन निर्मला प्रकाशचंद सोगानी
श्रीमती जैन निर्मला सुशील कुमार जी पांड्या
श्रीमती शरणलता नरेन्द्रकुमार जैन
श्रीमती मंजु प्रकाशचंद जी जैन (काला)
श्री जैन संदीप बोहरा
श्री राकेश कुमार जैन
श्री जैन राजेन्द्र कुमार अजय कुमार दनगसिया
श्री जैन पूनचंद, देवेन्द्र, धीरेन्द्र कुमार सुथनिया
श्री नाथूलाल कपूरचंद जैन
श्रीमती जैन चांदकंवर प्रदीप पाटनी
श्री विनोद कुमार जैन
श्री नरेश कुमार जैन
इंजीनियर श्री सुनील कुमार जैन
श्री जिनेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती उषा ललित जैन
श्री रमेश कुमार जैन
श्रीमती आशा जैन
श्री ताराचंद दिनेश कुमार जैन
श्री मनोज कुमार मुन्नालाल जैन
श्री जैन ज्ञानचंदजी गदिया
श्री जैन निहालचंद मिलापचंद गोटेवाला
श्री विशाल जैन कैलाश बड़जात्या

पिसानगन

श्री जैन पुखराज पहाड़िया
श्री जैन सज्जन कुमार दोशी
श्री जैन अशोक कुमार राकेश कुमार दोशी

कुचामनसिटी

श्री जैन चिरंजीलाल पाटोदी
श्री जैन सुरेश कुमार अमित कुमार पहाड़िया
श्री जैन विनोद कुमार पहाड़िया
श्री जैन लालचन्द पहाड़िया

भाव विज्ञान परिवार

✳ आजीवन सदस्य ✳

श्री जैन गोपालचंद प्रदीप कुमार पहाड़िया
श्री जैन सुरेश कुमार पांड्या
श्री जैन सुन्दरलाल रमेश कुमार पहाड़िया
श्री जैन संजय कुमार महावीर प्रसाद पांड्या
श्री जैन कैलाशचन्द प्रकाशचंद काला
श्री जैन विनोद विकास कुमार झाँझरी
श्रीमती जैन चूकीदेवी झाँझरी
श्री जैन अशोक कुमार बज
श्री जैन संतोष प्रवीण कुमार पहाड़िया
श्री जैन वीरेन्द्र सौरभ कुमार पहाड़िया
श्री जैन भंवरलाल मुकेश कुमार झाँझरी
श्री जैन ओमप्रकाश शीलकुमार झाँझरी

भोपाल

डॉ. प्रो. पी.के. जैन, एमएएनआईटी
श्री जैन एस.के. बजाज
श्री जैन प्रसन्न कुमार सिंघई
श्री सुभाष चंद्र जैन
श्रीमती विमला रमेश चंद्र जैन
श्री सुनील जैन
श्री राजेन्द्र के जैन (चौधरी)
श्री आर.के. जैन, एक्साइज इंसपेक्टर
श्री तेजकुमार एस.एल. जैन
श्री विनय कुमार राजकुमार जैन
श्री सुशील जैन (सुशील आटो)
श्रीमती शांतिबाई जैन

मुम्बई

श्री जैन एन.के. मित्तल, सी.ए.
श्री जैन हर्ष कोछल्ल, बी.ई.
श्री दीपक जैन
श्री धीरेन्द्र जैन
श्रीमती शर्मिला ललितकुमार बज जैन
श्रीमती जैन रंजना रमेशचंद शाह
श्री अजित कुमार जैन मुंबई

संगमनेर, अहमदनगर

श्री जैन कैलासचंद दोघूसा, साकूर

सीकर

श्री जैन महावीर प्रसाद पाटोदी
श्री महावीर प्रसाद जैन लालसवाले (देवीपुरा कोठी)
श्री ज्ञानचंद जैन, फतेहपुर शेखावटी

दाँता-रामगढ़

श्री जैन विजय कुमार कासलीवाल, दाँता
श्री निशांत जैन, दाँता-रामगढ़
श्री जैन राजकुमार काला, दाँता-रामगढ़
श्री जैन विनोद कासलीवाल, दाँता
श्री जैन सुनील बड़जात्या, दाँता-रामगढ़
श्री जैन अमरचंद सेठी, दाँता-रामगढ़
श्री हरकचंद जैन झांझरी, दाँता
श्रीमती मायादेवी कैलाशचंद जैन

रानोली (सीकर)

श्री विनोद कुमार जैन
श्री जैन राजकुमार छाबड़ा
श्री जैन शान्तिलाल रांरा
श्री जैन रतनलाल कासलीवाल
श्री जैन सुभाषचंद छाबड़ा
श्री जैन विकास कुमार काला
श्री जैन ज्ञानचंद बड़जात्या
श्री जैन गुलाबचंद छाबड़ा (डाकुड़ा)
श्री जैन सुशील कुमार छाबड़ा

अलवर

श्री मुकेश चंद जैन
श्री सुंदरलाल जैन
श्री शिवचरनलाल अशोक कुमार जैन
श्री सुरेशचंद संदीप जैन
श्री राकेश नथ्थूलाल जैन
श्री चंद्रसेन जैन
श्री अंकुर सुभाष जैन
श्री बंशीधर कैलाशचंद जैन
श्री अशोक जैन
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्री धर्मचंद जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन
श्री प्रवीन कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्री दीपक चंद जैन
श्री राजीव कुमार जैन
श्री प्रेमचंद जैन
श्री अनंत कुमार जैन
श्री के.के. जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री सुमेरचंद जैन
श्री अनिल कुमार जैन राखीवाला
एडवोकेट श्री खिल्लीमल जैन

सागर

श्री मनोज कुमार जैन
श्री प्रदीप जैन, इनकमटैक्स

तिजारा

श्री शिखरचंद जैन
श्री हुकुमचंद जैन
श्री आदीश्वर कुमार जैन
अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर
श्री अशोक कुमार जैन
श्री मनीष जैन

पांडीचेरी

श्री जैन पारसमल कोठारी
श्री जैन गणपतलाल नेमीचन्द कासलीवाल
श्री जैन नेमीचन्द प्रसन्न कुमार कासलीवाल
श्री जैन चम्पालाल निरंजन कुमार कासलीवाल
श्री जैन नथमल गौतम चन्द सेठी
श्री जैन मेघराज जयराज बाकलीवाल
श्री जैन आसूलाल भागचंद कासलीवाल
श्री जैन मदनलाल राजेन्द्र कुमार कासलीवाल
श्री जैन सोहनलाल अरिहंत कुमार पहाड़िया

रेवाड़ी

श्री सुरेशचंद जैन
श्री अजित प्रसाद जैन पंसारी
श्री पदम कुमार जैन
श्री नानकचंद जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री रविन्द्र कुमार जैन
श्री अजय कुमार जैन
श्री पोलियामल जैन
श्री दालचंद जैन
श्री ब्रह्मचारी वीरप्रभु जैन
श्री सुभाषचंद जैन
श्री वीरेन्द्र कुमार जैन बजाज
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री राहुल सुपुत्र अशोक कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती चमनलता एवं कान्ता जैन
श्री देवेन्द्र कुमार बादनलाल जैन
श्री अरविंद जैन (प्रेसीडेंट)
श्री के. एस. जैन, धारूहेड़ा

दिल्ली

श्रीमती अनीता जैन
श्री विजेन्द्र कुमार जैन, शाहदरा
श्री एम.एल. जैन, शाहदरा
श्री अंकित कुमार जैन, शाहदरा
श्री लोकेश जैन, शाहदरा
श्रीमती जैन राजरानी, ग्रीनपार्क
श्री इन्द्र कुमार जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रेनू जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती पुष्पा जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती रुकमणी जैन, ग्रीनपार्क
श्रीमती हेमा जैन, ग्रीनपार्क
श्री मनीष सुभाषचंद जैन, कैलाश नगर

मेरठ

श्री हर्ष कुमार जैन
श्री देवेन्द्र कुमार जैन सराफ
श्री इंद्रप्रकाश जैन, मवाना

पटियाला

श्रीमती कमलारानी राजेन्द्र कुमार जैन

हस्तिनापुर

श्री विजेन्द्र कुमार जैन

राँची

श्री योगेन्द्र जैन

गाजियाबाद

श्री गौरव जे.डी. जैन
श्री विकास जैन
श्री राजकुमार जैन
श्री एन.सी. जैन
श्री निखिल जैन
श्रीमती सोनिया सुनील कुमार जैन
श्री अशोक कुमार कुंवरसेन जैन
श्री सुभाष जैन
श्री पवन कुमार जैन
श्री प्रवीन कुमार महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती शारदा जैन
श्री डी.के. जैन
श्री अनिल कुमार जैन
श्री जयकुमार नितिन कुमार जैन
श्री प्रवीण कुमार रोशनलाल जैन
श्री अशोक कुमार मालती प्रसाद जैन
श्री प्रदीप कुमार जैन
श्री महेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती अनुपमा राहुल जैन
श्री सुरेश चंद जैन
श्री विवेक जैन

गुड़गांव

एडवोकेट श्री कुंवर सेन जैन
श्री देवेन्द्र जैन
श्री रमेश चंद संदीप कुमार जैन
श्री श्रेयांस जैन
श्री महावीर प्रसाद जैन

भाव विज्ञान परिवार

✴ आजीवन सदस्य ✴

श्रीमती सुषमा जैन
श्री सतीश चंद मयंक जैन
श्री रोबिन सी.के. जैन
श्री जैन चंद्रप्रकाश मित्तल
श्रीमती विजय जैन
श्री कैलाश चंद जैन
श्री संजय जैन

पूर्णिया (बिहार)

श्री चांदमल जैन

कलकत्ता

श्री हरीशचंद्र जैन
श्री जैन मनी खजांची

बेंग्लुरू

श्री प्रसन्न कुमार जैन छाबड़ा
श्री जयकुमार जैन
श्री रमेश कुमार जैन

ब्यावर

श्री दीपक कुमार जैन
श्री जैन महेन्द्र कुमार छाबड़ा
श्री धर्मचन्द रांवका जैन
श्री जैन देवेन्द्र कुमार फागीवाला
श्री जैन सारस मल झांझरी
श्री सुशील कुमार जैन बड़जात्या
श्री जैन अशोक कुमार सोगानी
श्री जैन भैरूलाल काला
श्री धरमचन्द जैन
श्री जैन प्रबोध कुमार बाकलीवाल
श्री जैन सुरेश चन्द बड़जात्या
श्री जैन कमल कुमार दगड़ा
श्री जैन शांतीलाल गदिया
श्री सुशील कुमार जैन
श्री जैन पदम चन्द गंगवाल
श्री मयंक जैन
श्री मुकेश कुमार जैन
श्री जैन चिरन्जी लाल पहाड़िया
श्री मनोज कुमार जैन
श्रीमती जैन पुष्पा सोनी
श्री जैन अशोक कुमार काला
श्री जैन विजय कुमार फागीवाला
श्री जैन पारसमल अजमेरा
श्री जैन स्वरूपचन्द रांवका
श्री जैन डॉ. दीपचन्द सोगानी
श्री जैन श्रीपाल अजमेरा
श्री घनश्याम जैन शास्त्री

सुजानगढ़

श्री जैन पारसमल पाण्ड्या

मेड़ता रोड/सिटी (नागौर)

श्री जे.डी. जैन

श्री राजेन्द्र जैन
श्री जैन अमरचंद धर्मचंद पाटनी
श्री जैन रामरतन पाटनी

रामगंज मण्डी, कोटा

श्री शांतिलाल जैन
सुश्री कोमल महावीर जैन
श्री पदम कुमार विमल कुमार जैन
श्री जैन रमेशचंद जी विनायका
श्री जैन अमोलकचंद बागड़िया
श्रीमती उषा बागड़िया जैन
श्री जैन शिखरचंद टोंग्या
श्री जैन प्रकाश विनायका
श्री पदम कुमार राजमल जैन
श्री जैन केवलचंद लुहाड़िया
श्री जैन अजीत कुमार सेठी
श्री जैन महावीर कुमार शाह
श्री अमर कुमार जैन
श्री जैन प्रेमचंद सबड़ा
श्री जैन जयकुमार विनायका
श्री जैन नेमीचंद ठौरा
श्री नाथूलाल जैन
श्री सुशील कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार नीलेश कुमार जैन
श्री निर्मल कुमार लालचंद जैन
श्री जैन सुमेरमल पहाड़िया
श्री जैन रामगोपाल सैनी
श्री महेन्द्र कुमार जैन सबद्रा
श्री जैन शिखरचंद्र बागड़िया
श्री चैतन्यप्रकाश जैन
श्री हनुमानसिंह गुर्जर (जैन), तहसीलदार
श्री देशराज जोशी
श्रीमती पदमा विनोदकुमार जैन विनायका
श्रीमती जैन कल्पना विनोद कुमार मित्तल

कोटा

श्री अभिषेक रूपचंद जैन
श्री जैन पीयूषकुमार डॉ. पदमचंद दुगेरिया
श्री कैलाशचंद मोतीलाल जैन
श्री प्रकाशचंद सोहनलाल जैन
श्री निर्मल कुमार जैन सेठी

सोनकच्छ, देवास

श्री जैन पदमकुमार पियूष कुमार छाबड़ा

पारोला (जलगांव)

श्री जयंतीलाल हीरालाल जैन

झालरपाटन (झालावाड़)

श्री विमल कुमार जैन (पाटोदी)

सिंगोली (नीमच)

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन पाठशाला

बूंदी

श्री रूपचंद मोहनलाल जैन

भिण्डर (उदयपुर)

श्री ऋषभ कुमार जैन सीघवी
श्री विनोद कुमार गंगावत जैन
श्री जैन आदिश्वरलाल कन्हैयालाल
श्री जैन मनोहरलाल मदनलाल भुलावत
श्रीमती अनीता सुरेन्द्र जैन
श्रीमती जैन रामचंदी राजमल कठालिया
श्री बाबरमल जैन
श्री पारसमल जैन (लिखमावत)
श्री सुरेश कुमार जैन (धर्मावत)
श्री जैन प्रकाशचंद भादावत
श्री जैन बसन्तीलाल वाणावत
श्री राजेश कुमार जैन (भादावत)
श्री जैन महावीरलाल कठालिया
श्री जैन अम्बालाल अनिल कुमार गोदड़ोत
श्री जैन बगदीलाल गौतमलाल नागदा
श्री सतीशचंद्र जैन
श्री जैन शान्तिलाल फान्दोत
श्री जैन भंवरलाल जैन नागदा

उदयपुर

श्री जैन महेन्द्र कुमार टाया
श्री कुन्थु कुमार जैन (गणपतोत)
श्री जैन चन्द्र कुमार मित्तल
श्री राजेन्द्र कुमार जैन
श्रीमती सुशीला जैन पांड्या
श्री थावरचंद जैन
श्री रोशनलाल लालावत जैन
श्री जैन रमेश कुमार वैद्य
श्री जैन भगवतीलाल भादावत
श्रीमती मंजु कैलाशचंद्र जैन
श्रीमती निर्मला जीवन्धरलाल जैन
श्री महावीर जैन
श्रीमती जैन रेखा शैलेन्द्र कुमार सांगानेरिया
श्री जैन झमकलाल टाया
श्री सुरेशचंद जैन भादावत
श्री नवीन जैन
श्रीमति शशि धनपाल जैन

जूनागढ़ (गिरनारजी)

सुश्री जैन रीटाबेन विपुल कुमार टोपीवाला

बड़ौत (बागपत)

श्री नरेशचंद जैन

ललितपुर

श्री संजय कुमार संतोष कुमार जैन

सूरत

श्री जैन प्रमोदचंद्र मणिलाल मेहता
श्री जैन अशोक भाई पूनमचंद दोशी
श्री रमनलाल जेठालाल जैन
श्री जैन भूपेन्द्र भाई मेहता
श्री जैन भरत के मेहता
श्री जैन सुभाचंद्र बंसीलाल शाह
श्रीमती जैन इंदिरा बेन तरुण कुमार मास्टर
श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर
श्री जैन बाबूलाल केशवलाल शाह
श्री जैन शैलेष कुमार मेहता
श्री जैन रजनीभाई मोहनलाल दोशी
श्रीमती जैन वैशाली अश्विन भाई पारिख
डॉ. जैन नूतन हितेन्द्र मेहता
श्री जैन प्रवीणलाल चंदूलाल मेहता
श्री जैन नरेन्द्र एन मेहता
सुश्री जैन मार्गी पी. सुतरिया
श्री जैन तेजस परिमल शाह
श्री जैन सुभाष भरमा चौगुले
श्री जैन टीकमचंद गोधा
डॉ. जैन निमिषा विकेन शाह
श्री जैन अतुल भाई कान्तिलाल मेहता
श्रीमती जैन कुसुम नवनीत दोशी
श्रीमती जैन नीला सुरेश गांधी
श्री जैन अशोक भाई मेहता
श्रीमती जैन तृप्ति एम मोदी
श्री जैन चन्दनमल ऋषभ कुमार लूणदिया
श्री जैन राजेश कुमार पाटोदी
श्री जैन धनपाल जी मगनलाल हाथी बांसवाड़ा वाले
श्री जैन सुरेश कुमार निर्मल कुमार पाटनी
श्री जैन हिम्मत भाई नेमीचन्द्र अहमदाबाद वाले
श्री दीपचन्द्र मुकेश कुमार पाटनी
श्री जैन चेतनप्रकाश लूणदिया
श्री जैन धरमचन्द संजय कुमार छाबड़ा शेषम वाले
श्री जैन मुकेश कुमार कुलदीप कुमार पंचोरी
श्री जैन राजकुमार मनोज कुमार अजमेरा
श्रीमती ललितादेवी देवेन्द्र कुमार पाटनी, भागलपुर
श्रीमती जैन साधना केरोत
श्री जैन संतोष कुमार शारदा कासलीवाल
श्री जैन प्रदीप कुमार अनिल कुमार डबारा
श्री जैन चौथमल ललितकुमार भादावत
श्रीमती जैन वीनादेवी स्व. दुलीचंद पाटनी
श्रीमती ममता पदमचंद जैन
श्री जैन रूपचंद विमलादेवी
श्री सुरेन्द्र कु मार जैन
श्रीमती बीनादेवी दुलीचंद जैन
श्री जैन लक्ष्मीचंद चम्पालाल जी
श्री जैन ललित कुमार चोथमल जी
श्री रवि कुमार जैन

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

रंगीन फोटो

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....
जिला .... प्रदेश ....से **भाव विज्ञान पत्रिका** हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/-☐ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/-☐ परम संरक्षक रुपये 21000/-☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/-☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/-☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/-☐ आजीवन सदस्य रुपये 1,100/-☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पत्र व्यवहार का पता :- ....
....
जिला .... प्रदेश ....
पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....
फोन नम्बर .... मोबाईल ....
ई-मेल .... है।
क्या आप अपने मोबाईल पर महाराज श्री के विहार/कार्यक्रम के फ्री मैसेज प्राप्त करना चाहेंगे ?(हाँ/नहीं)

दिनांक : हस्ताक्षर

कृपया यहाँ से निकालें

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री ....
को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट : (1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत एस.बी. एकाउंट नं. **63016576171** एवं **IFS Code SBIN0030005** में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता :

''भाव विज्ञान'', एम-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल- 462 003 (म.प्र.) को प्रेषित करें।

भाव विज्ञान

(त्रैमासिक पत्रिका)

BHAV VIGYAN

आशीर्वाद एवं प्रेरणा

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य

मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण ।

☛ सत् साहित्य समीक्षा।

☛ अहिंसात्मक जीवन शैली।

☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : **(1) ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।**

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

मानस्तम्भ महामस्तकाभिषेक में व्यवस्था करते हुए
रमेश भाई दोशी, अरविन्द भाई गांधी।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का 41 वाँ
आचार्य पदारोहण दिवस।

मंचासीन प्रवचन देते हुए मुनिश्री।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के परिषह विजयी जीवन
पर उद्‌बोधन देते हुए व्रती सुरेन्द्र भाई।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के सूरत की प्रभावना
पर अपना भाव व्यक्त करते हुए श्री नरेश जैन दिल्ली

प्रमुख चातुर्मास कलश स्थापन कर्ता श्री नरेश जैन दिल्ली परिवार
के लिए प्रशस्ति पत्र देते हुए अध्यक्ष श्री हर्षद भाई जैन मेहता।

सिद्ध क्षेत्र श्री गिरनार जी में मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज भक्तगणों के साथ

रजि. क्रं. **MPHIN/2007/27127**

सिद्ध क्षेत्र श्री गिरनार जी की वंदना करते हुए मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज

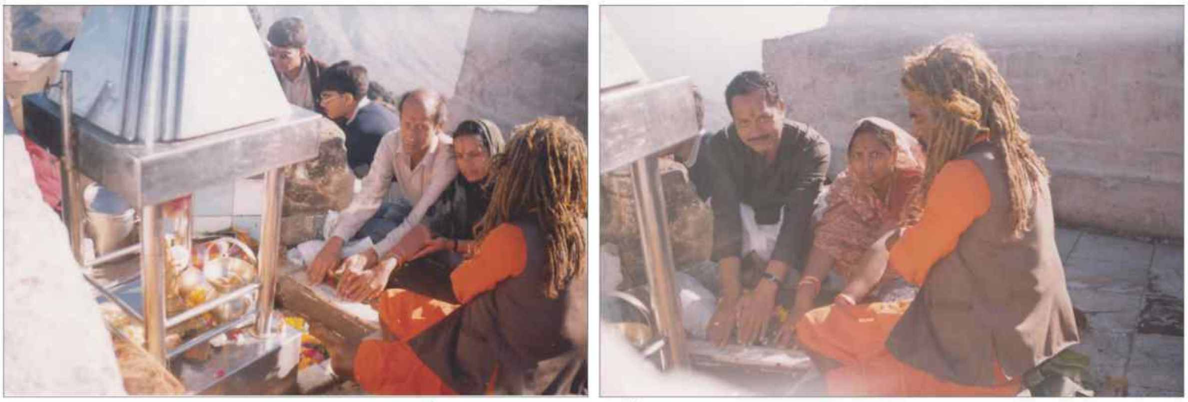

श्री गिरनारजी सिद्ध क्षेत्र की पांचवी टोंक पर जैन श्रद्धालु डॉ. अक्षय जैन एवं श्री धर्म गोयल सपरिवार, ग्वालियर दर्शन करते हुए

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स,
जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा,' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)